बारह महीने की

मुकद्दस दुआऐं

और

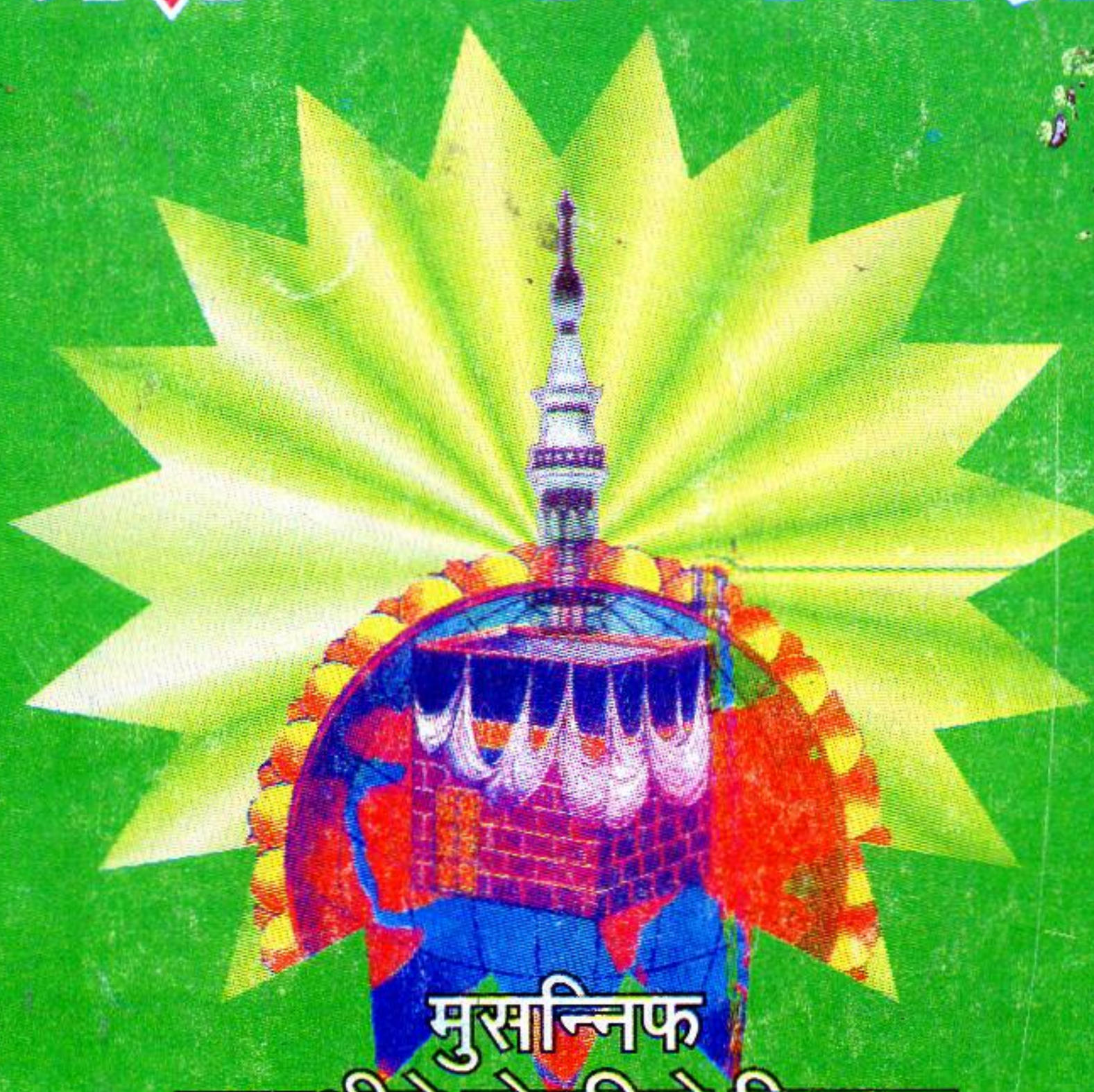

तरीक़ -ए-फातिहा

मुसन्निफ

जानशीने मोहसिने मिल्लत

मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी

शायकरदा :

मोहसिने मिल्लत एकैडमी

मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन मुस्लिम यतीम खाना

रायपुर (छ.ग.)

फोन-(0771) 535283

मोबाइल-94252-31208

गरीब नवाज प्रेस, मदरसा रोड, रायपुर, फोन-5038587, 5038596

बारह महीने की

मुकद्दस दुआएं

और

तरीक़-ए-फ़ातिहा

मुरत्तिब

जानशीने मोहसिने मिल्लत

मौलाना मोहम्मद अली फारूक़ी

मोहतमिम मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारुल यतामा

रायपुर (छत्तीसगढ़)

शायकरद :

मोहसिने मिल्लत ऐकेड़मी

मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन मुस्लिम यतीम खाना रायपुर (छ.ग.)

www.mohsinemillat.com

E-mail m_a-farooqui786@yahoo.com

2

फेहरिस्त मुकद्दस दुआएं और तरीकए फातिहा

1. औराद वो वजाएफ और दुआओं की अहमियत 5
2. मोहर्रमुल हराम 22
3. दुआए आशूरा हिन्दी 26
4. दुआए आशूरा अर्बी 29
5. उर्स वो फातिहा मोहर्रमुल हरामा 30
6. सफरूल मुज़फ्फर 31
7. दुआए सफर हिन्दी 33
8. दुआए सफर अर्बी 34
9. उर्स वो फातिहा सफरूल मुज़फ्फर 35
10. माहे रबीउल अव्वल शरीफ 36
11. उर्स वो फातिहा माहे रबीउल अव्वल शरीफ 39
12. रबी उस्सानी 40
13. नमाज़े ग़ौसिया 40
14. अस्माए याज़दा सरकारे गौसे पाक 43
15. उर्स वो फातिहा रबी उस्सानी 46

16. जमादियुल ऊला 47
17. उर्स वो फातिहा जमादियुल ऊला 47
18. जमादिउस्सानी 48
19. उर्स वो फातिहा जमादिउस्सानी 49
20. रजबुल मुरज्जब 50
21. उर्स वो फातिहा रजबुल मुरज्जब 54
22. शबे मेराज 56
23. माहे शाबान 60
24. दुआए निस्फे शाबान हिन्दी 65
25. दुआए निस्फे शाबान अर्बी 66
26. रमज़ानुल मुबारक 67
27. वज़ाएफ शबेक़द्र 70
28. उर्स वो फातिहा रमज़ानुल मुबारक 72
29. माहे शव्वाल 73
30. उर्स वो फातिहा माहे शव्वालुल मुकर्रम 74
31. माहे ज़ी क़अदह 75
32. उर्स वो फातिहा ज़ीकअदह 76
33. माहे ज़िलहिज्जा 77
34. उर्स वो फातिहा माहे ज़िलहिज्जा 80

35. फातेहा का तरीक़ा 84
36. ईसाले सवाब का तरीक़ा 84
37. पंज गंज क़ादरिया 86
38. पंज गंज मोहसिने मिल्लत 86
39. अहदनामा हिन्दी 87
40. अहदनामा अर्बी 88
41. शजर-ए-आलिया क़ादरिया 89
42. शजर-ए-तय्येबा चिश्तिया फरीदिया हामिदिया 91
43. खत्मे ख्वाजगान 93
44. शजर ए तय्येबा चिश्तिया हामिदिया(फारसी) 95
45. तोशा शरीफ की फातिहा 96
46. हज़रत मोहसिने मिल्लत के वज़ाएफ 100
47. फातिहा का इन्क़ेलाबी पैग़ाम 104
48. मोहसिने मिल्लत एकाडमी की हिन्दी में तारीख साज़ किताब 127
49. एक नज़र इधर भी 128

औराद वो वजाएफ और दुआओं की अहमियत

दुआ की रिफअत वो अज़मत, उसके जमाल वो कमाल और उसकी शान वो शौकत का अन्दाज़ा लगाना हो तो हज़रत अबू हुरैरा रदेअल्लाहो तआला अन्हो की उस हदीसे पाक पर गौर करें जिस की तंवीर से और जिसकी गुलाब को शर्मा देने वाली खुशबू से मुसीबत वो परेशानी और गम व बेचैनी में घिरे दिल वो दिमाग महक रहे हैं। कल्ब वो जिगर में सुकून वो मसर्रत की चांदनी मचल रही है । यहां तक कि परेशानियों के तूफान से लरज़ता दिल और गमों के आंसुओं में भीगी आंखें भी खुशियों की चमक महसूस करने लगती हैं ।

इस हदीसे पाक को ''हाकिम'' ने अपनी मशहूर किताब में तहरीर किया है। रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं कि

الدُّعَاءُ سِلَاحُ الْمُؤْمِنِ وَعِمَادُ الدِّيْنِ وَنُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

दुआ मुसलमानों का ताकत है द्दीन का खम्भा है और ज़मीन वो आसमान का नूर है इसी तरह एक जगह हदीस में यह भी आया है कि

اَكْثِرُوْا مِنَ الدُّعَاءِ فَاِنَّ الدُّعَاءَ يَرُدُّ الْقَضَاءَ الْمُبْرَمَ

दुआ में कसरत करो। क्यूं कि दुआ कजा को रोक देती है।

हदीस की मशहूर किताब''इब्ने असाकिर'' मेंएक हदीस इस तरह भी आई है कि

اَلدُّعَاءُ جُنْدٌ مِّنْ اَجْنَادِ اللّٰهِ مُجَنَّدٌ يَرُدُّ الْقَضَاءَ اَنْ يُّبْرَمَ

दुआ खुदा की फौज़ में एक ऐसी चढ़ाई वाली फौज है जो उस कज़ा को भी रोक देती है जो मुबरम है।

मिश्कात शरीफ की एक हदीस में तो दुआ को

इबादत से इतना करीब कर दिया गया है कि काहिल से काहिल और इन्तेहाई कमज़ोर ईमानवाला भी झूम-झूम कर दुआ के लिए हाथ उठाने लगता है।

عن النعمان بن بشیر قال قال رسول صلے اللہ علیہ وسلم

الدعاء ھو العبادۃ (مشکوۃ ص ۱۹۵

दुआ वही इबादत है

عن سلیمان فارسی قال قال رسول اللہ صلے اللہ علیہ وسلم

لا یرد القضاء الا الدعا

दुआ इबादत का मग्ज़ और उसकी रूह है।

हदीस की मशहूर किताब तिर्मीज़ी और इब्ने माजा ने हज़रते अबू हुरैरा से एक ऐसी हदीस भी नकल की है जिससे दुआ का विकार, उसकी बुज़ुर्गी और उसकी अज़मतों का ऐसा चिराग रौशन होता है जिसकी किरणों से वो महल भी जगमगाने लगते हैं जहां लादीनियत की तारीकियां अपना अंधकार फैलाए नूर

ईमान को धुंधलाने में शब वो रोज़ लगी हैं।

عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ لَیْسَ شَیْءٌ اَکْرَمَ عَلَی اللّٰہِ مِنَ الدُّعَاءِ (رواہ الترمذی)

खुदा की बारगाह में दुआ से बढकर कोई चीज़ गेरिमी और बा वेकार नहीं। कहते हैं किस्मत का लिखा कौन मिटाए । और ज़िन्दगी के दिन कौन बढ़ाए । मगर तिर्मीज़ी शरीफ की इस हदीसे पाक ने ऐसे महरूमुल किस्मत और निराशाओं के संसार में भटकने वालों के वीरान दुनिया में उम्मीदों का वो गुलशन महकाया और मुर्दा आत्माओं में आशाओं का वो दीप जलाया जिसके मधुर प्रकाश और पवित्र सुगंध ने मायूसियों के दलदल में फंसे परेशान दिलों में उम्मीद वो यकीन का ऐसा उजाला बिखरा और ज़िन्दगी का ऐसा चिराग जला कि उसके मधुर प्रकाश से उस दुनिया में भटकने वालों के चेहरे भी आकाश गंगा के दुधिया प्रकाश मे

धुले चेहरे की तरह चमकने लगे।

عَنْ سُلیمان فارسی قال قال رسول اللہ صلے اللہ علیہ وسلم

لا یرد القضاء الا الدعا

कजा वो मुकद्दर को दुआ के सिवा कोई चीज नहीं लौटाती और नेक सुलूक के सिवा कोई चीज़ उमर नहीं बढाती।

लगे हाथ एक और ऐसी ही हदीसे पाक पढते चलिए जिसकी बर्कतों से बंदों का मुकद्दर ही नहीं जगमगा रहा है बल्कि उस पर आसमानी रहमतों के दरवाजज़ भी इस तरह खुल रहे हैं कि उसकी नूरी किरणों से मुर्दा दिल, परेशान दिमाग और बेचैन रूह भी सुकून वो मसर्रत की चादंनी में नहाकर ज़िन्दगी की पथरीली राहों में उम्मीद वो यक़ीन और मसर्रत वो शादमानी का ऐसा गुलशन महका रही है जिसके मधुर सुगंध और इन्केलाबी खुश्बू से कश्मीर की

ज़ाफरानी वादी और केसरी सुगंध भी शर्मा कर अकीदतों के फूल न्यौछावर कर रही है। हदीसे पाक का इर्शाद है कि

عَنْ ابْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَنْ فُتِحَ لَہٗ مِنْکُمْ بَابُ الدُّعَاءِ فُتِحَتْ لَہٗ اَبْوَابُ الرَّحْمَۃِ

जिस खुशनसीब के लिए दुआ का दरवाज़ा खोला गया उसके लिए रहमतों का दरवाज़ा खोल दिया जाता है।

रब्बे काएनात का उम्मते मुस्लेमां पर कैसा अज़ीम एहसान है कि न सिर्फ उसके दरबार में बार-बार मांगने से वो खुश होता है बल्कि मोमिन की किसी भी जाएज़ दुआ को बर्बाद होने से बचा कर उसे शर्फे कुबूलियत से भी नवाज़ता है। अलबत्ता उसकी कुबूलियत का अंदाज़ निराला होता है। इस सिलसिले में मुजद्दिदे आज़म सय्यदना फाज़िले बरेलवी रदेल्लाहो तआला अन्हो तहरीर फरमाते हैं कि सरवरे मासूम सल्लल्लाहो

तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत है कि

दुआ बन्दों की तीन बातों से खाली नहीं होती। या उसका गुनाह बख्शा जाता है। या दुनिया में उसे फाएदा हासिल होता है। या उसके लिए आखिरत में भलाई जमा की जाती है कि जब बन्दा अपनी दुआओं का सवाब देखेगा जो दुनिया में मुस्तजाब (कुबूल) नहीं हुई थी। तमन्ना करेगा। काश! दुनिया में मेरी कोई दुआ कुबूल नहीं होती और सब यहीं के वास्ते जमा रहतीं।

आम हालात में मुसलमान दुआ करता ही है। बल्कि आला हज़रत के मुताबिक हर रोज़ कम अज़ कम इक्कीस बार दुआ करना वाजिब है। मगर जब वो परेशानियों में घिर जाता है तो न सिर्फ खुसूसी दुआओं की तरफ मुतवज्जह होता है बल्कि वो उस वक्त ऐसे औराद वो वज़ाएफ की तलाश में भी लग जाता है जिससे दुआओं में असर भी पैदा हो और

मक़सद वो मुराद तक वो जल्द से जल्द पहुंच भी जाए।

इस सिलसिले में कुर्आन वो हदीस की रौशनी में उलमाए केराम फूक्हाए इस्लाम और औलियाए उज्ज़ाम ने अपने-अपने तजरेबात की रौशनी में अहादीसे मुबारेका के तहत कहीं खास दुआओं का और कहीं उन मौकों का जिक्र किया है जहां दुआओं का फौरन असर दिखने लगता है। इधर उन औराद वो वजाएफ का सहारा लेकर परेशान दिल बेचैन दिमाग और भीगी हुई आंखों ने बारगाहे खुदावंदी में दामन फैलाया। उधर रहमते खुदा वंदी झूमने लगी। अर्श से फर्श तक नूर का सावन बरसने लगा। धरती से लेकर आकाश तक रहमतों की घटा छाने लगी और देखते ही देखते मांगने वाले का दामन मुरादों से भरने लगा। तमन्नाओं का गुलशन महकने लगा। आरज़ूओं के सूखे चमन में रहमत वो नूर की बारिश होने लगी और फिर ऐसा महसूस होने लगा जैसे उसके उजडे दयार में,

उसकी कमज़ोर झोपड़ी में, उसके हिलते दीवारों में, एक नई बहार अंगड़ाई लेने लगी और रहमते खुदावंदी खुद सहारा देने के लिए उसके आंगन में उतर आई जिससे उसकी वीरान कुटिया अचानक खुशियों से झूमने लगी।

जहां औराद वो वज़ाएफ से दुआओं की कुबूलियत में चार चांद लग जाते हैं वहीं उस से पहले कुछ ऐसे काम भी करना चाहिए जिससे दुआ और जल्द शर्फे कुबूलियत हासिल कर सके। इस सिलसिले में उल्माए केराम का कहना है कि जब कोई खुसूसी दुआ मांगनी हो तो उस से पहले कोई ऐसा अच्छा और नेक काम करे जिससे खुदा की रहमते खास तेज़ी से उसकी तरफ मुतवज्जह हो सके। जैसा कि सदका वो खैरात करें। जिसके बारे में हदीसे पाक का इर्शाद है कि-

عَنْ ابْنِ عُمَرَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ فَتَحَ لَهٗ مِنْكُمْ بَابُ الدُّعَاءِ فُتِحَتْ لَهٗ اَبْوَابُ الرَّحْمَةِ

सदक़ा खुदा के गज़ब (नाराज़गी) को ठंडा कर देता है اَلصَّدَقَۃُ تُطْفِیْ غَضَبَ الرَّبِّ

हज़रत मोहसिने मिल्लत शाह हामिद अली फारूकी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि दुआ से पहले खुफिया और पोशीदा सदका ऐसा असर रखता है कि आदमी अपने मुसल्ले से उठने भी नहीं पाता कि दुआ की बर्कतों से उसका सीना जगमगाने लगता है। सदका वो खैरात के साथ अपने पिछले गुनाहों से तौबा करे और वक्त कराहिय्यत न हो तो दो रिकअत नमाज़ नफिल भी पढ़ लें।

इस सिलसिले में वालिदे गेरामी हज़रत मौलाना फारूक अली फारूकी रहमतुल्लाहे तआला अलैह फरमाया करते थे कि

मेरे एक अज़ीज़ को सख्त परेशानियों ने घेर लिया। वो कई जगह पहुंचे मगर मुद्दआ हाथ न आया। हर जगह से थक हार के एक दिन मेरे पास पहुंचे। मैंने उन्हें

सदक़ा वो खैरात और तौबा वो इस्तिग़फार के साथ नमाज़े नफिल की तरफ मुतवज्जह किया और साथ ही साथ एक वज़ीफा भी बताया। कहते हैं कि दूसरे ही दिन जब उनसे मुलाक़ात हुई तो मैंने देखा कि उनका चेहरा खुशी वो मसर्रत की चांदनी में नहा रहा था। मुझे देखते ही मुस्कुराते हुए वो कहने लगे मैंने कई वज़ाएफ पढ़े। बहुतों के पास पहुंचा। मगर आप के बताए हुए तरीके पर जैसे ही मैंने अमल किया। ऐसा मालूम हुआ जैसे कामयाबी खुद ही मेरे इस्तक़ेबाल के लिए खड़ी मुझे आवाज़ दे रही है।

कुर्आने पाक की हर हर आयत में जहां अमल वो किरदार की दुनिया मुस्कुरा रही है कामयाबी वो कामरानी के गुलशन महेक रहे हैं वहीं रूहों में इन्क़ेलाब बरपा कर देने वाली उसकी रुहानी पाकीज़गी, पत्थरों के सीने में असर पैदा कर देने वाली उसकी तासीर और शैतानों जिन्नातों को पछाड़ देने वाली

उसकी ग़ैबी ताकत को सारा संसार तस्लीम कर रहा है।

उल्माए इस्लाम और औलियाए केराम ने उम्मत की कामयाबी और उनके दिल वो दिमाग की पाकीज़गी के लिए अपने तजरेबात और अपने अनुभव के प्रकाश में जो दुआएं और जो वज़ाएफ लिखे हैं। उससे किताबें भरी पड़ी हैं। मुझसे कई बार लोगों ने एक ऐसी किताब की फरमाईश की जिसमें हर माह के वज़ाएफ के साथ उर्स वो फातिहा की तारीख भी तहरीर हो। उन्हीं की फरमाईश पर यह किताब तैयार की गई।

ख्याल था कि औराद व वज़ाएफ का सहारा लेकर कुछ जाहिलों की जेहालत और कुछ इस्लाम दुश्मन ताक़तों के साज़िशों की वजह से जो गैर शरई उमूर दाखिल हो गये हैं। जिसकी वजह से कुछ कलमा पढने वालों ने एक ऐसी तहरीक़ चला रखी है जिसका पूरा फायदा इस्लाम दुश्मन ताक़तें हासिल कर रही हैं। लेहाजा ऐसे उमूर की निशानदेही भी करता चलूं। मगर

वक्त की कमी और दिगर मसरूफियत की वजह से फिलहाल उसके लिए वक्त निकालना मुश्किल है। खुदा ने तौफीक दी तो किसी और मोके पर इस सिलसिले में कलम उठाऊंगा। आज तो इस किताब का सिर्फ इतना ही मकसद है कि आम लोग इससे फायदा उठायें और मेरे लिए भी दुनिया वो आखिरत में रहमत व मगफिरत और बख्शीश का ज़रिया बने।

मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा रायपुर (छ.ग.) की बुनियाद हज़रत मोहसिने मिल्लत मौलाना शाह हामिद अली साहब फारूकी रहमतुल्लाहे तआला अलैह ने उस वक्त डाली थी जब इस्लाम दुश्मन ताकते अंग्रेज़ों के इशारे पर भारत को गुलाम बनाये रखने के लिए मुसलमानों के ईमान को लूटने का खतरनाक प्रोग्राम लिए मिल्लते इस्लामिया को बर्बादी की खाई में डाल रहा था। मगर खुदाई मशिय्यत के तहत गौसुल आज़म और ख्वाजए

पाक (रदेअल्लाहो तआला अन्हुमा) के एक खामोश इशारे पर हज़रत मोहसिने मिल्लत यहां तशरीफ लाते हैं और अंग्रेज़ों की इस्लाम दुश्मन साज़िशों और भारत विरोधी षड़यंत्रों से मुल्क वो मिल्लत को बचाने के लिए दीन के एक मज़बूत किले की बुनियाद डालते हैं।

हज़रत मोहसिने मिल्लत जहां बेमिसाल आलिमे दीन और नाएबे रसूल थे वहीं मुजाहिदे इस्लाम और दीन के गाज़ी भी थे। आपने इस जवां मर्दी और बहादुरी के साथ अंग्रेज़ों का मुकाबला किया कि मुसलमानों को गैर मुस्लिम बनाने वाला शुद्धि आंदोलन अंग्रेज़ों की सरपरस्ती के बावजूद खुद अपनी मौत आप मरने लगा। अंग्रेज़ों ने आप के मुजाहिदाना किरदार को देखकर आप को जेल की तारीक और अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया मगर आप वहां भी देश की आज़ादी और इस्लाम की तब्लीग का फरीज़ा इस शान वो शौकत से निभाते रहे कि जहां जेल के कैदियों में देश की आज़ादी

का नया जोश वो जज्बा पैदा हुआ वहीं कई अंग्रेजों और गैर मुस्लिमों ने कल्मए तौहीद पढकर खुद को इस्लाम के दामन से वाबस्ता कर लिया। जेल से छूटने के बाद आपने दीन वो ईमान की हिफाजत के लिए मदरसा की बुनियाद डाली। ताकि देश की आजादी के लिए मुजाहेदीन के साथ दीन के अलम्बरदार भी यहां तैयार हो सकें जिससे अंग्रेज और इस्लाम दुश्मन ताकते दोनों घबरा उठीं। उन्होंने चाहा इस दीन वो ईमान के किले को जड़ से उखाड़ फेंके। मगर एक वली ए कामिल के हाथों इसकी बुनियाद थी। इसलिए खुदा की रहमतों ने सहारा दिया। बगदाद वो अजमेर के आकाओं ने करम किया। आज उन्हीं के फैज़ान का सदक़ा है कि इस मदरसे का फैज़ान आसमान में उमड़ती हुई काली धटाओं की तरह पूरे इलाके पर बरस रहा है और गुलशन में महेकते हुए फूलों की तरह इसकी खुशबू से एक मोमिन का दिल वो दिमाग महेक

रहा है। मदरसे की बुनियाद डालकर आपने न सिर्फ
इस्लाम दुश्मन ताकतों से मुसलमानों के तहफ्फुज
का शानदार इन्तेजाम किया बल्कि हर मोमिन के दिल
वो दिमाग को इश्के रसूल की बर्कतों से इतना महका
दिया कि आज घरों घर और जगह-जगह उसकी खुशबू
महसूस की जा रही है जिसमें मक्का वो मदीने का
इंक़लाबी पैग़ाम भी है और नजफे अशरफ वो कर्बला
का मुजाहिदाना किरदार भी, और ग़ौसो वो ख्वाजा
की बर्कतें भी हैं ईमान वो यकीन की चांदनी भी,
अल्लामा फज़्ले हक़ खैराबादी और शेर दकिन टीपू
सुल्तान की मुजाहिदाना घन गरज भी है और मुजद्दिदे
आग़म सय्यदना इमाम अहमद रज़ा के इल्म वो इर्फान
का फैजान भी, जिसे देखकर क़ौमी जमीर पुकार उठा
–

फज़्ले खुदा पे फैज़े नबूवत पे नाज़ है
एक नाएबे नबी की नियाबत पे नाज़ है

खिदमाते दीन उल्फते मिल्लत को देखकर।
छत्तीसगढ़ को मोहसिने मिल्लत पे नाज़ है।

इस किताब में औराद वो वज़ाएफ के सिलसिले में हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा के वज़ाएफ भी आप को कदम-कदम पर मिलेंगे। जिसकी बर्कतों से फैज़ हासिल करने वाले आज भी नज़र आते हैं। (उन्हीं के ज़रिए यह चीज मुझ तक पहुंची जो आज आप के सामने हैं। जिसे खुदा तौफीक़ दे वो आज भी इनसे फ्यूज़ वो बर्कात हासिल कर सकता है।

फकद
दुआओं का तलबगार
मोहम्मद अली फारूक़ी
अगस्त 2002

बारह महीनों के वज़ाएफ

-: मोहर्रमुलहराम :-

* पहली मोहर्रम को दो रिकअत नमाजे नफिल पढ़कर तीन बार यह दुआ पढ़ें।

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ اللّٰہُ الْاَبَدُ الْقَدِیْمُ وَھٰذِہٖ سَنَۃٌ جَدِیْدَۃٌ اَسْئَلُکَ فِیْھَا الْعِصْمَۃَ مِنَ الشَّیْطَانِ وَالْعَوْنَ عَلٰی نَفْسِ الْاَمَّارَۃِ بِالسُّوْءِ وَاَسْئَلُکَ الْاِشْتِغَالَ بِمَا تُقَرِّبُنِیْ اِلَیْکَ یَا کَرِیْمُ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ ط

* अल्लाहुम्मा अन्तल्लाहुल अ बदुल कदीमो। व हाज़ेही सनातुन जदीदुन असअलोका फीहल इस्मता मिनश्शैताने वलऔना अला कुल्ले नफसिल अम्मा रते बिस्सूए व अस्अलोकल अश्ग़ाला बे मा तकर्रूबनी एलैका या करीमो या ज़लजलाले वल इकराम
* बुज़ुर्गाने दीन का कहना है जो कोई इस दुआ

को पढ़ेगा अल्लाह तआला उसकी मदद के लिए एक फरिश्ता मुतअय्यन फरमाएगा जो हर बला वो आफत और शैतान के शर से उसकी हिफाज़त करेगा।

* जो कोई पहली तारीख को दो रिकअत नफिल पढ़कर तीन बार यह दुआ पढ़ें हर परेशानी से महफूज़ रहेगा।

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِیْ وَتَجَاوَزْ عَنِّیْ وَاحْفَظْنِیْ مِنْ كُلِّ آفَةٍ وَبَلِيَّةٍ

अल्लाहुम्मर्हमनी व तजावुज़ अन्नी वह फिजनी मिनकुल्ले आफतिन व बलिय्यतिन.

* मोहर्रम की जुमा को जो कोई चार रिकअत इस तरह पढ़े कि हर रिकअत में अल्हम्दो शरीफ के बाद 31 बार सूरए एख्लास पढे तो गोया उसने तमाम आस्मानी किताबों को पढ़ा और हर आयत के बदले एक गुलाम आज़ाद

किया। (अनीसुल वाएज़ीन)

* शबे आशूराको दो रिकअत नमाज़ इस तरह पढे कि हर रिकअत में सूरए फातिहा के बाद 3-3 बार सूरए एख्लास पढ कर शोहदाए करबला के नाम बख्श दें। हजरत मोहसिने मिल्लत मौलाना शाह हामिद अली फारूकी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि कयामत तक उसकी कबर में अल्लाह तआला रौशनी पैदा फरमाएगा।

* जो कोई चार रिकअत नमाज़ इस तरह पढे कि हर रिकअत में अल्हम्दो शरीफ के बाद 50 बार सूरए एख्लास पढ़े तो अल्लाह तआला उसके अगले और पिछले 50 बरस के गुनाह माफ फरमाता है और मलाए आला में उसके लिए नूर के हज़ार मेम्बर बनाता है।

(गुन्नियतुत्तालेबीन सफा 427 अनीसुल वाएजीन सफा 221)

* जलालतुल इल्म उस्तादुल उल्मा सय्यदी हुजूर हाफिज़े मिल्लत अलैहिर्रहमा बानी अलजामेअतुल अशरफिया मुबारकपुर फरमाते हैं कि चार रिकअत नफिल इस तरह पढ़ें की हर रिकअत में सूरए फातेहा के बाद 15 बार सूरए एख्लास पढ़ें। सलाम के बाद उसका सवाब शोहदाए करबला खुसूसन हज़रातें हसनैन करीमैन रदेअल्लाहो तआला अन्हुमा के नाम बख्श दें। कयामत के दिन यह दोनों हज़रात उसकी शेफाअत करेंगे।

* सातवीं मोहर्रम को 100 बार दरूद शरीफ और 11 बार सूरए एख्लास पढ़ें फिर चने में फातिहा पढ़कर हज़रत बाबा फरीद गंज शकर की बारगाह में बख्श दें। फिर उस चने का हल्वा बनाकर मरीज़ को खिलाएं।

हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा का फरमाना है कि जादू वगैरा और हर सख्त बीमारी से शेफा के लिए यह बेहतरीन नुस्खा है।

* *आशुरे का रोज़ा* – नौवीं और दसवीं मोहर्रम दोनों दिन रोजा रखना चाहिए और अगर न हो सके तो आशुरा ही के दिन रोज़ा रखें। इस रोज़े की ज़बरदस्त फ़ज़ीलत है।

दुआए आशूरा

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

सुबहानल्लाहे मलअल मिज़ाने व मुन्तहल इल्मे व मबल गर्रेदाए व ज़िनतल अर्शे ला मलजाआ वला मनजाआ मिनल्लाहे इल्ला इलैहे सुब्हानल्लाहे अ द् दश्शफऐ वलवतरे व अददकलेमातिल्लाहित्ताम्माते कुल्लेहा व नस

अलोहुस्सलाम त बेरहमतेही वला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अजीमे वहोवा हसबोना व नेमलवंकीलो व नेमलमौला व नेमन्नसीरो व सल्लल्लाहो तआला अला खैरे खलकेही सय्येदेना मोहम्मदिवं व आलेही अजमईन.

फिर दरूद शरीफ दस बार पढ़ें फिर हाथ उठाकर इसे पढ़ें

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

या काबेला तौबते आदमा यौमा आशूराआ व या फारेजा कुरबे जिन्नूने यौमा-आशूराआ व या जामेआ शमले याकूबा यौमा आशूराआ व या सामेआ दअवते मुसा व हारूना यौमा आशूराआव या मग़ीसा इब्राहिमा मिनन्नारे यौमा आशूराआव या राफेआ इदरीसा अलस्समाए

यौमा आशूराआव या मुजीबा दावते सालेहिन फिन्नाकते यौमा आशूराआव या नासेरा सय्यदेना मोहम्मदिन सल्लल्लाहो तआला अलैहे व आलेही वसल्लम यौमा आशूराआ व या रहमानद्दुनिया वल आखेरते व रही-म-होमा सल्लेअला सय्यदेना मोहम्मदिन व सल्ले व सल्लिम अला जमीइल अम्बियाए वलमुरसलीन वक्दे हाजातेना फिद्दुनियां वल आखेरते व तव्विल उमरना फी ताअतेका व रेदाका व हय्येना हयातन तय्येबतन व तवफ्फना अललइमाने वल इस्लामे बेरहमतेका यां अरहमर्राहेमीन ।

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

इलाही बेहुरमतिल हुसैन व अखिहे व उम्मेही व अबीहे व जद्देही व नबीयेहि फर्रिज अम्मा अना

फीहे व सल्लल्लाहो तआला अला खैरे खल्केही सय्यदेना मोहम्मदिन व आलेही अजमईन।

दुआए आशूरा

दुआए आशूरा بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سُبْحَانَ اللّٰهِ مِلْءَ الْمِيْزَانِ وَمُنْتَهَى الْعِلْمِ وَمَبْلَغَ الرِّضَا وَزِنَةَ الْعَرْشِ لَامَلْجَاءَ وَلَامَنْجَا مِنَ اللّٰهِ اِلَّا اِلَيْهِ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَدَدَ الشَّفْعِ وَالْوَتْرِ وَعَدَدَ كَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ كُلِّهَا وَنَسْئَلُهُ السَّلَامَةَ بِرَحْمَتِهٖ وَلَا حَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ وَهُوَ حَسْبُنَا وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ وَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ اَجْمَعِيْنَ پھر درود شریف دس مرتبہ پھر ہاتھ اٹھا کر

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَا قَابِلَ تَوْبَةِ اٰدَمَ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا فَارِجَ كَرْبِ ذِي النُّوْنِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا جَامِعَ شَمْلِ يَعْقُوْبَ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا سَامِعَ دَعْوَةِ مُوْسٰى وَهَارُوْنَ

يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ يَا مُغِيْثَ اِبْرَاهِيْمَ مِنَ النَّارِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ يَا رَافِعَ اِدْرِيْسَ اِلَى
السَّمَاءِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ يَا مُجِيْبَ دَعْوَةِ صَالِحٍ فِى النَّاقَةِ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ يَا نَاصِرَ
سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ وَيَا رَحْمٰنَ الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةِ وَرَحِيْمَهُمَا صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّصَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى جَمِيْعِ الْاَنْبِيَاءِ وَ
الْمُرْسَلِيْنَ وَاقْضِ حَاجَاتِنَا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَطُوْلَ عُمُرِنَا فِى طَاعَتِكَ
وَرِضَاكَ وَحَيِّنَا حَيٰوةً طَيِّبَةً وَّتَوَفَّنَا عَلَى الْاِيْمَانِ وَالْاِسْلَامِ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

उर्स वो फातेहा मोहर्रमुल हराम

1 फातिहा अमीरूल मोमेनीन सैय्यद उमर फारूक रदे अल्लाह तआला अन्हो।

5 फातिहा हज़रत बाबा फरीद गंज शकर

10 यौमे आशूरा

14 उर्स ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ्तिए आजमे हिन्द

18 विसाल सय्यद हज़रत ज़ैनुल आबेदीन रदे अल्लाहो तआला अन्हो

21 विसाल सय्यदना हज़रत बिलाल रदे अल्लाहो तआला अन्हो।

26 उर्स ताजुल औलिया नागपुर

26 फातिहा हज़रत मोहसिने मिल्लत बानी मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा रायपुर (छत्तीसगढ़)

28 उर्स सय्यदना मख्दूमे सिमनानी कछौछा शरीफ

–: सफरुल मुज़फ्फर :–

1. चांद रात में 4 रिकअत नमाज़े नफिल इस तरह पढ़ें कि पहली रिकअत में सूरए फातिहा के बाद कुल या अय्यूहल काफेरून। दूसरी में सूरए अख्लास। तीसरी में सूरए फलक। चौथी में सूरए नास 15–15 बार पढ़ें। बाद सलाम इय्याक ना बुदू व इय्याका नस्तईन 100 बार पढकर 70 बार दरूद शरीफ पढें। इसका पढ़ने वाला हर बला व मुसीबत से इन्शाअल्लाह तआला महफूज रहेगा।

2. कुछ लोग यह समझते हैं कि इस माह के आखरी बुध को रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने गुस्ले सेहत फरमाया था। जब कि यह गलत है। बल्कि इन दिनों आप का मर्ज़ और भी बढ़ गया था। इसलिए उस दिन

ज़्यादा से ज़्यादा अपना वक़्त इबादत और इस्तिग्फार में गुजारना चाहिए। हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा उस रात औलियाए केराम की इबादत इस तरह तहरीर फरमाते हैं कि 4 रिकअत नफिल इस तरह पढ़ें कि बाद सूरए ए फातिहा पहली रिकअत में सूरए अलमनशरह लका या सूरए काफेरून, दूसरी में सूरए एख्लास तीसरी में सूरए फलक और चौथी में सूरए नास 10, 10 बार पढ़ें। बाद सलाम 11 बार दरूदे ताज और फिर सलात वो सलाम पढकर रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में नज़र करें और उनके वसीले से दुआ मांगे।

3. दुआए सफर :-

माहे सफर में हर रोज़ रात में पढ़ने की दुआ :-

अल्लाहुम्मा सल्लेअला सय्यदना मोहम्मदिन अबदेका व नबीय्येका व रसूले कन्नबिय्यिल उम्मी व आलेही व बारिक वसल्लिम। अल्लाहुम्मा इन्नी आऊजोबिका मिनशर्रे हाज़श्शहरे व मिन कुल्ले शिद्दतिन व बलाइन व बलिय्यतिन कद्दर्ता फीहे या दहरो या दयहूरो या दय हारो। या कौनो या कयनूनो या कयनानो या अज़लो या अबदो या मुबदिओ या ज़ल जलाले वल इकराम या ज़ल अर्शिल मजीदे अनता तफअलो मा तुरीदो। अल्लाहुम्मह रूस बे ऐनेका नफसी व अहली व माली व वलदी व दीनी व दुनयाई मिन हाज़ेहिस्सेनते व केना मिनशर्रे माकदयता फीहा व अकरिमनी फिस्सफरे बेकरमिन्नज़रे व खतिमहो ली बे सलामतिन व बेसआदतिन व अहली व

जमीए उम्मते सय्यदना मोहम्मदिन अलैहिस्सलाम या ज़लजलाले वल इकराम। इब तलैतनी बे सेह हतेहा बे हुर्मतिल अबरार वल अख्यार या अज़ीज़ो या ग़फ्फार या करीमो या सत्तार बे रहमतेका या अर्हमर्राहेमीन

4. 25 सफर को आला हज़रत फाज़िले बरेलवी रदेअल्लाहो तआला अन्हो के नाम फातिहा दिलाएं। हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि उसकी खास बर्कत यह है कि इल्म से सीना रौशन हो जाता है।

दुआए सफर

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِلٰهِیْ بِحُرْمَةِ الْحُسَيْنِ وَاَخِيْهِ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ وَجَدِّهٖ وَنَبِيِّهٖ فَرِّجْ عَمَّا اَنَا بِيْهِ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ اَجْمَعِيْنَ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَنَبِيِّكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ

عَلٰی اٰلِہٖ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ ھٰذَا الشَّھْرِ
وَمِنْ کُلِّ شِدَّۃٍ وَّبَلَاءٍ وَّبَلِیَّۃٍ قَدَّرْتَ فِیْہِ یَادَھْرُ یَادَھْرُ یَادَیْھَارُ
وَیَاکَوْنُ وَیَاکَیْنُوْنُ وَیَاکَیْنَانُ یَااَزَلُ یَااَبَدُ یَامُبْدِئُ یَامُعِیْدُ
یَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ یَاذَاالْعَرْشِ الْمَجِیْدِ اَنْتَ تَفْعَلُ مَاتُرِیْدُ
اَللّٰھُمَّ احْرُسْ بِعَیْنِکَ نَفْسِیْ وَاَھْلِیْ وَمَالِیْ وَوَلَدِیْ وَدِیْنِیْ وَدُنْیَایَ
مِنْ ھٰذِہِ السَّنَۃِ وَقِنَا مِنْ شَرِّ مَاقَضَیْتَ فِیْھَا وَاَکْرِمْنِیْ فِی الصَّفَرِ بِکَرَمِ
النَّظَرِ وَاخْتِمْہُ لِیْ بِسَلَامَۃٍ وَّبِسَعَادَۃٍ وَاَھْلِیْ وَاَوْلِیَائِیْ وَاَقْرِبَائِیْ وَ
وَجَمِیْعِ اُمَّۃِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَلَیْہِ السَّلَامُ یَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ اِبْتَلَیْتَنِیْ
بِصِحَّتِھَا بِحُرْمَۃِ الْاَبْرَارِ وَالْاَخْیَارِ یَا عَزِیْزُ یَاغَفَّارُ یَاکَرِیْمُ یَاسَتَّارُ
بِرَحْمَتِکَ یَااَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ

उर्स वो फातिहा सफरूल मुज़फ्फर

18 उर्स हज़रत दाता गंज बख्श लाहौर व फातेहे योरोप अल्लामा
अर्शदुल कादरी जमशेदपुर

25 उर्स सय्यदना आला हजरत फाजिले बरेलवी

27 फातिहा सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी

28 शहादत सय्यदना हजरत इमामे हसन रदेअल्लाहो तआला
अन्हो

28 उर्स मुजद्दिदे अल्फेसानी शेख अहमद फारूकी सरहंद शरीफ

-: माहे रबीउल अव्वल शरीफ :

-1. चांद रात- 21 बार दरूदे ताज पढ़ें फिर एक बार सूरए यासीन पढ़कर हुज़ूर पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के वालिदैन करीमैन, आप की आले पाक, उम्मेहातुल मोमेनीन और असहाबे केराम रिज़वानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन की बारगाह में नज़र करके कामयाबी के लिए दुआ मांगें। खास तौर पर मुकद्दमे के लिए यह वज़ीफा इन्तेहाई कामयाब है।

2. शबे विलादत - सुबह सादिक से पहले 21 बार सूरए मुज़म्मिल पढ़ें अव्वल आखिर 11, 11 बार दरूद शरीफ पढ़कर पानी या शक्कर में दम करके रख लें। जिस घर में लडाई झगडा होता हो वहां उसे पानी वगैरा में मिलाकर पिला

दें । दुश्मनी और नफरत मोहब्बत में बदल जायेगी।

3. बाद नमाज़े ईशा गुसल करें साफ और खूशबूदार कपड़ा पहनकर 2-2 रिकअत की नियत से 4 रिकअत नफिल इस तरह पढ़ें कि बाद सूरए फातिहा 11- 11 बार सूरए एख्लास पढ़ें। बाद सलाम 101 बार दरूद शरीफ 11 बार दरूदे ताज और तीन बार सूरए मुज़म्मिल पढ़ें फिर 11 बार दरूद शरीफ पढ़कर सलात वो सलाम पढ़ें और खीर पर फातिहा दिला कर नमाज़ियों में तक़सीम कर दें।

हज़रत मोहसिने मिल्लत शाह हामिद अली साहब फारूक़ी बानी मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा रायपुर (छ.ग.) अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि जिस मक़सद के

लिए इसे पढ़ेगा उस में कामयाबी मिलेगी।

इस माहे मुकद्दस में रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम के अनवार वो तजलियात से धरती की सीना जगमगा उठा था। फरिश्तों के आने जाने से मक्का के गली वो कूचों में मुश्क वो अंबर को शर्माने वाली खुशबू फैल गई थी। इंसानी मुकद्दर की बुलंदियों से कहकशां की बुलंदियां शर्माने लगीं थी। रसूले पाक के कदमों का बोसा लेने के लिए जिबरईल अमीन धरती पर उतर आए थे आप की विलादत की खुशी में खान ए काबा भी झूम रहा था और रुहूल अमीन वहां आसमानी झंडा भी लहरा रहे थे। इसलिए चांद दिखते ही अपने घरों पर हरा झंडा लहराएं और इश्क वो मोहब्बत में डूबकर दरूद वो सलाम का तोहफा सरकार की बारगाह में पेश

करें। फिर गरीब वो मिस्कीन पर सदका वो खैरात करें जिससे पूरे घर में साल भर अमन वो शांति रहेगी। सदका वो कैरात से बलाएं दूर होंगी और कारोबार में बर्कत होगी।

उर्स वो फातिहा रबीउल अव्वल शरीफ

12 ईद मिलादुन्नबी सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम

13 उर्स हज़रत अलाउद्दीन साबिर कलयरी

14 उर्स हज़रत कुतबुल अक़ताब महरौली, देहली

24 उर्स हज़रत कलीमुल्लाह शाह जहानाबादी, देहली

27 उर्स हज़रत बू अली शाह कलंदर पानीपत

27 फातिहा हज़रत बुर्हाने मिल्लत जबलपुर

-: रबी उस्सानी :-

1. पहली और पंद्रहवी शब को 4 रिकअत नफिल इस तरह पढ़ें कि हर रिकअत में पांच-पांच बार सूरए एख्लास पढ़ें। बाद सलाम 100 बार दरूदे गौसिया पढ़ें। अगर यह याद न हो तो फिर कोई सा भी दरूद शरीफ पढ़कर सरकारे गौसे पाक की बारगाह में नज़र करें। हज़रत मोहसिने मिल्लत का फरमान है कि जिस मक़सद के लिए इसे पढ़ा जायेगा। उसमें उसे कामयाबी मिलेगी।

2. नमाज़े गौसिया - ग्यारहवीं की शब, बाद नमाज़े मगरिब यह नफिल पढ़ें। जिस मकसद के लिए पढ़ेगा कामयाब होगा।

तर्कीब :- हर रिकअत में बाद सूरए फातिहा 11 बार सूरए एख्लास पढ़ें। बाद सलाम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की हम्द वो सना करें। फिर 11 बार रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम पर दरूद शरीफ पढ़ें। फिर ग्यारह बार यह कहें।

يارسول الله يا نبي الله اغثني وامددني في قضاء حاجتي يا قاضي الحاجات

या रसूलल्लाह या नबी अल्लाह अगिस्नी व उमदुदनी फी कदाए हाजती या क़ादियल हाजात

फिर इराक़ की जानिब 11 कदम चले और हर कदम पर यह कहे ।

ياغوث الثقلين ياكريم الطرفين اغثني وامددني في قضاء حاجتي

يا قاضي الحاجات नजर करने के बाद उनके वसीले से दुआ करें। मक़सद में कामयाबी मिलेगी।

4. 11 बार सूरए एखलास 3 बार दरूदे ताज पढ़कर सरकारे गौसे पाक के यह मुकद्दस नाम पढ़ें और फातिहा दिलाएं –

–: गौसे पाक के ग्यारह मुक़द्दस बाबरकत नाम :–

या सय्यदना मोहयुद्दीन फदलुल्लाह

या शेख मोहयुद्दीन अमानुल्लाह

या गौस मोहयुद्दीन कुतबुल्लाह

या अबदाल मोहयुद्दीन सैफुल्लाह

या बादशाह मोहयुद्दीन कुतबुल्लाह

या ख्वाजा मोहयुद्दीन कुदरतुल्लाह

या मखदूम मोहयुद्दीन बुहानुल्लाह
या मोहिब मोहयुद्दीन आयतुल्लाह
या कुतुब मोहयुद्दीन शाहेदुल्लाह

5. मुसीबत और परेशानी के वक्त दो रिकअत नमाज़े नफ़िल पढ़कर इसे 11 बार पढ़ें। कामयाबी मिलेगी –

या सय्यद वो सुल्तान फ़कीर वो ख्वाजा मुखदूमुलगरीब। बादशाह वो शेख वो दुर्वेश वो वली मौलाना।। मीर स्वालेह फातिमा सानी असामी वालेदैन। बू सईद पीरे इशां मर्दे हक मर्दाना।। जैनब वो बीबी नसीबा खौहराने हज़रत अन्द। इं असामी पाक रा बायद कि हर फरज़ाना।।

سیّد وسُلطان فقرو خواجہ مخدوم الغریب   بادشاہ و شیخ و درویش و ولی مولانہ
میرِ صالح ، فاطمہ ثانی ، اسامی والدین   بُوسعیدِ پیرِ ایشاں مردِ حق مردانہ
زینب و بی بی نصیبہ خواہرانِ حضرت اند   ایں اسامی پاک را باید کہ ہر فرزانہ

6. गौसे पाक के ग्यारह मुकद्दस नाम जिनके विर्द से रहमतें उतरती हैं, बर्कतें मिलती हैं, अनवार वो तजल्लियात की बर्सात से दिलों की दुनिया में खौफे खुदा, इश्के रसूल, मोहब्बत इस्लाम, तिलावते कुर्आन के जज़बात उबल उबलकर ज़िन्दगी में नया इंक़ेलाब बरपा कर देते हैं। दुश्मन बरबाद होते हैं और घर आबाद

होते हैं। *हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिरहमा फरमाते हैं कि इन नामों को जब मैंने जेल की अंधेरी कोठरी पढ़ा तो मैंने खुद अपनी आंखों से आसमानी मदद को उतरते हुए देखा।*

अस्माए याज़दा सरकारे ग़ौसे पाक

अल्लाहुम्मा सल्ले अला सय्यदना मोहम्मदिन बे जमालेका व जमाले हबीबेका व नबिय्येका व शफीएका सय्यदना मोहम्मदिन वअला आलेही व अस्हाबेही व बारिक वसल्लिम.

1. इलाही बे इज़्ज़ते व हुर्मते कुतबिल अक़ताब गौसिस्सकलै निल आज़म हज़रत अल हसनी वल हुसैनी कुतबे रब्बानी अल गौसिस्समदानी महबूबे हक़्क़ानी सर चश्म ए सुल्तानी सय्यद मोहियुद्दीन अब्दिल कादिर जिलानी कुतबिल जिन्ने वल इन्से वल मलाएकते कद्दसल्लाहुल अज़ीज़

2. इलाही बे इज्जते ब हुर्मते कुतुबिल अक़ताब गौसिस्सक़लैनिल गौसुल आज़म हज़रत शाह मोहियुद्दीन अब्दिल क़ादिर जीलानी शौखिल जिन्ने वल इन्से वल मलाएकते कद्दसल्लाहुल अज़ीज़

3. इलाही बे इज़्ज़ते व हुर्मते कुताबिल अक़ताब गौसिस्सक़लै निल गौसिल आज़म हज़रत शाह मोहियुद्दीन अब्दिल क़ादिर जिलानी कुतबिल बर्रे वल बहरे कद्दसल्लाहुल अज़ीज़

4. इलाही बे इज़्ज़ते व हुर्मते कुतुबिल अक़ताब गौसिस्सक़लै निल गौसिल आज़म हज़रत शाह मोहियुद्दीन अब्दिल क़ादिर जिलानी कुतबिल जुनूबे वस्समाए क़द्दसल्लाहुल अज़ीज़

5. इलाही बे इज़्ज़ते व हुर्मते कुतुबिल अक़ताब गौसिस्सक़लै निल गौसिल आज़म हज़रत मोहियुद्दीन अब्दिल क़ादिर जीलानी कुतबिल मशरिक़ैन वल मग़रिबैन क़द्दसल्लाहुल अज़ीज़

6. इलाही बेइज़्ज़ते व हुर्मते कुतुबिल अक़ताब गौसिस्सक़लै निल गौसिल आज़म हज़रत मोहियुद्दीन अब्दिल क़ादिर जीलानी कुतुबिन्नुजूमे वश्शहाबे कद्दसल्लाहुल अज़ीज़.

7. इलाही बेइज़्ज़ते व हुर्मते कुतुबिल अक़ताब गौसिस्सक़लै निल गौसिल आज़म हज़रत औलियाइल आज़म मोहियुद्दीन अब्दिल क़ादिर जीलानी कुतुबिल

अदे वरसमावाते क़द्दसल्लाहुल अज़ीज़.

8. इलाही बेइज़्ज़ते व हुर्मते कुतुबिल अक़ताब ग़ौसिरसक़लै निल ग़ौसिल आज़म हज़रत ख्वाजा मोहियुद्दीन अब्दिल क़ादिर जीलानी कुतुबिल अर्शे वल कुर्सी क़द्दसल्लाहुल अज़ीज़.

9. इलाही बेइज़्ज़ते व हुर्मते कुतुबिल अक़ताब ग़ौसरसक़लै निल ग़ौसिल आज़म हज़रत दरवेश मोहियुद्दीन अब्दिल कादिर जीलानी कुतुबिल लौहे वल कलमे क़द्दसल्लाहुल अज़ीज़.

10. इलाही बे इज्ज़ते व हुर्मते कुतुबिल अक़ताब ग़ौसिरसक़लै निल ग़ौसिलआज़म हज़रत फक़ीर वली मोहियुद्दीन अब्दिल क़ादिर जीलानी कुतुबिल फौक़े वल अर्दे व तहतिरसरा क़द्दसल्लाहुल अज़ीज़.

11. इलाही बे इज़्ज़ते व हुर्मते कुतुबिल अक़ताब ग़ौसिरसक़लै निल ग़ौसिल आज़म हज़रत ग़रीब मिस्कीन मो हियुद्दीन अब्दिल क़ादिर जीलानी राके बिल मालएकते साहे बिल मेराजे ताबेइन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वअला आलेही वअस्हाबेही वसल्लम

या हमराइलो 'या लामाइलों' या तनाइलो बे हक़्क़े या शेख अब्दुल क़ादिर जीलानी शैइन लिल्लाह या मोहम्मद स्वल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम अफ्तहिल अबवाब अखबिरनी बे हक़्क़े या बुद्दूहो या बुद्दूहो - अला इन्ना औलिया अल्लाहे ला खौफुन अलैहिम व ला हुम यहज़नून- बे रहमते का या अरहमर्राहेमीन

उर्स वो फातिहा रबी उस्सानी

3 फातिहा उम्मुल मोमेनीन हज़रत उम्मेसल्लमा रदेअल्लाहो तआला अन्हो।

11 ग्यारहवीं शरीफ

17 उर्स हज़रत महबूबे इलाही देहली

17 उर्स ताजदारे छत्तीसगढ़ लुतराशरीफ (जिला- बिलासपुर, छ.ग.)

19 फातिहा हज़रत मौलाना अब्दुल रहमान जामी रहमतुल्लाहे तआला अलैह-:

-: जमांदेयुल ऊला :-

1. पहली रात 20 रिकअत नमाज़े नफिल दो दो रिकअत की नियत से इस तरह पढ़ें कि हर रिकअत में बाद सूरए फातिहा सूरए एख्लास तीन बार बढ़ें। बाद सलाम 100 बार दरूद शरीफ पढ़कर तमाम औलियाए केराम की बारगाह में नज़र करें।

2. इस माह की नौचंदी जुमरात को बाद नमाज़े ईशा दो रिकअत नफिल पढ़ें जिस में सूरए फातिहा के बाद 3-3 बार आयतुल कुर्सी या सूरए एख्लास पढ़ें। बाद सलाम 101 बार दरूद शरीफ पढ़कर सरकारे गौसे पाक और ख्वाजा ग़रीब नवाज़ रदेअल्लाहो तआला अन्हुमा के नाम फातिहा दिलाएं। हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि बड़ी सी बड़ी मुसीबते और परेशानियां इससे दूर हो जाती हैं।

उर्स वो फातिहा जमादियुल ऊला

7 उर्स मौलाना अब्दुल हक़ सा. मोहद्दिसे देहलवी

14 उर्स फख्रुल औलिया हज़रत मौलाना फारुक़ अली फारुक़ी अलैहिर्रहमा

16 उर्स हुज्जतुल इस्लाम बरेली शरीफ

-: जमादिउस्सानी :-

1. बुज़ुर्गों ने फरमाया कि हज़रत सय्यदना सिद्दीके अकबर रदेअल्लाहो तआला अन्हो इस माह की चांद रात में 12 रिकअत नमाज़ पढ़ा करते थे। हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि रिज़्क़ और कारोबार में यह नमाज़ इन्तेहाई बा बर्कत है।

2. इस माह के पहले और दूसरे जुमा को बाद नमाजे जुमा 101 बार दरूद शरीफ पढ़कर सूरए कहफ 1 बार और सूरए अलम नशरह लका 11 बार पढ़कर पानी में दम करके बजुर्गाने दीन के नाम फातिहा दिला कर वो पानी महफूज़ कर लें। हजरत मोहसिने मिल्लत फरमाते हैं कि इख्तिलाजे क़ल्ब (हार्ट अटेक) और दिमाग़ी बीमारियों के लिए यह ज़बरदस्त असर रखता है।

3. हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा ही से यह वज़ीफा भी मंकूल है जो तिजारत और कारोबार के लिए इन्तेहाई मजुर्रब है। चूंकि 22 जमादिउस्सानी अमीरूल मोमेनीन सय्यदना सिद्दीक़े अकबर रदेअल्लाहो तआला

न्हो के विसाल की तारीख भी है। इसलिए इस शब बाद
माज़े ईशा दो रिकअत नफिल के बाद 100 बार दरूद
रीफ पढ़कर 41 बार सूरए एख्लास और 101 बार
कल्म ए तय्येबा पढ़ें। फिर 11 बार दरूद शरीफ पढ़कर
माम औलियाए के राम खुसूसन अमीरूल मोमेनीन
य्यदना सिद्दीक़े अकबर रदेअल्लाहो तआला अन्हो के
ाम नज़र करें और उनके वसील से दुआ मांगें।

उर्स वो फातिहा जमादियुस्सानी

1 उर्स जलालतुल इल्म उस्दादुल उल्मा हुज़ूर हाफिज़े
मिल्लत अलैहिर्रहमा बानी अल जामेअतुल
अशरफिया मुबारकपुर जिला-आज़मगढ़ (यू.पी.)
12 उर्स सय्यद शाह आले मुस्तफा माहरहरा शरीफ
16 उर्स हाजी अली बंबई
20 यौमे विलादत सय्येदा तय्येबा ताहिरा हज़रते फातेमा
रदेअल्लाहो तआला अन्हो
22 फातिहा अमीरूल मोमेनीन सय्यदना सिद्दीक़े अकबर
रदेअल्लाहो तआला अन्हो

-: रजबुल मुरज्जब :-

1. चांद रात बाद नमाज़े मग़रिब 2 रिकअत नफिल इस तरह पढ़ें कि बाद सूरए फातिहा 3-3 बार सूरए एख्लास पढ़ें। बाद नमाज़ 100 बार या हय्यो या क़य्युमो बेरहमते का अस्तगीसो يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ पढ़ें । अव्वल आखिर 11-11 बार दरूद शरीफ पढ़कर दुआ मांगें।

2. इस माह के शुरू और आखिर की किसी तारीख में 3 रोज़ा रखे और वक्ते इफ्तार आयतुल कुर्सी, सूरए इजाज़ुलज़े लतिल अर्दा सूरए एख्लास सूरए फलक़ और सूर नास 3-3 बार पढ़कर तमाम औलियाए केराम की बारगाह में नज़र करें।

3. इस माह के किसी भी जुमा को जुमा और असर के दरमियान 4 रिकअत नमाज़ इस तरह

पढ़ें कि बाद सूरए फातिहा आयतुल कुर्सी 7 बार सूरए अख्लास 5 बार । फिर बाद सलाम 25 बार لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ الْكَبِيْرِ الْمُتَعَالْ

लाहौला वला कुव्वत इल्लाह
बिल्लाहिल कबीरिल मुतआला

फिर सौ बार

अस्तगफिरूल्लहिल्लज़ी लाइलाहा इल्लाह हुव्वल हय्युल क़य्युमो ग़फ्फा रूज़्नूब व सत्तारूल उयूब व अल्लामुल ग़यूब व अतूबो एलैह

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَااِلٰهَ اِلَّاهُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ غَفَّارُ الذُّنُوْبِ سَتَّارُ الْعُيُوْبِ وَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ

फिर सौ बार दरूद शरीफ पढ़ कर सलात वो सलाम पढ़ें और अपने मक़सद में कामयाबी के लिए दुआ करें ।

4. 6 रजबुल मुरज्जब को 100 बार दरूद शरीफ पढ़कर 41 बार सूरए अलम नश्रह, 41 बार सूरए एख्लास और फिर 100 बार दरूद शरीफ पढ़कर 4 रिकअत नफिल इस तरह पढ़ें कि बाद सूरए फातिहा 3-3 बार सूरए कौसर पढ़ें। बाद सलाम 3 बार दरूदे ताज पढ़कर सुल्तानुल हिन्द ख्वाजा ग़रीब नवाज़ रदेअल्लाहो तआला अन्हो, उनके वालेदैन करीमैन, और उनके पीर वो मुर्शिद सय्यदना ख्वाजा उस्माने हारूनी रदेअल्लाहो तआला अन्हो की बारगाह में नज़र करें। हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि यह ऐसा वज़ीफा है कि जो कोई जिस मक़सद के लिए इसे पढेगा उसे ज़बरदस्त कामयाबी मिलेगी।

5. इस माह की 17 तारीख को सय्यदना

इमाम जाफरे सादिक रदेअल्लाहो तआला अन्हो के नाम फातिहा दिलायें (जिसे अवाम में कूंडा कहा जाता है) बाद फातिहा उनका तबर्रुक़ लोगों में तक़सीम करें।

कुछ जाहिल इस तबर्रुक़ को तक़सीम करना गुनाह समझते हैं। इस मौक़े पर दस बीबी और लकड़हारे का नकली झूठा किस्सा पढते हैं जो मनगढंत और गलत है। इसके बजाय खोल्फाए राशेदीन और सहाबए केराम के सच्चे वाकेआत या सूरए यासीन वगैरा पढ़ें ताकि ज़यादा से ज़यादा बर्कत हासिल हो सके।

6. 21 रजब सय्यदना अमीर मोआविया रदेअल्लाहो तआला अन्हो के विसाल की तारीख है। इसलिए उस दिन उनके नाम से फातिहा दिलाएं। ताकि ईमानी मज़बूती और उनकी बर्कतें हासिल हो सके।

7. किसी जुमा को हज़रत सय्यद जलाल बुखारी रहमतुल्लाहे तआला अलैह के नाम फातिहा दिलाएं। उसे भी कुंडा कहा जाता है।

8. इस माह की किसी भी रात में दस रिकअत नफिल 2-2 रिकअत की नियत से इस तरह पढ़ें कि हर रिकअत में एक बार सूरए काफेरून और दस बार सूरए एखलास पढ़कर बाद सलाम दरूद वो सलाम पढ़कर दुआ करें मक़सद में कामयाबी मिलेगी।

उर्स वो फातिहा रजबुल मुरज्जब

1 फातिहा हज़रत इमाम बाकिर रदेअल्लाहो तआला अन्हो

6 उर्स सुल्तानुल हिन्द शहेंशाहे हिन्दुस्तान ख्वाजा गरीब नवाज़ रदेअल्लाहो तआला अन्हो

14 उर्स सय्यद सालार मसऊद ग़ाज़ी बहराईच शरीफ

16 उर्स मोहद्दिसे आज़मे हिन्द कछौछा शरीफ

17 कूंडा फातिहा हज़रत इमाम जाफरे सादिक़ रदेअल्लाहो तआला अन्हो

22 फातिहा सय्यदना हज़रत अमीर मोआविया रदेअल्लाहो तआला अन्हो

27 शबे मेराज

-: शबे मेराज :-

1. 27 रजब की रात गुस्ल करे और साफ उमदा कपड़ा पहनें फिर इतर लगाकर 4 या 8 रिकअत नमाजे नफिल इस तरह अदा करें कि बाद सूरए फातिहा 7-7 बार सूरए इज़ा जाआ नसरूल्लाह पढ़ें। बाद सलाम 101 बार दरूद शरीफ और 3 बार दरूदे ताज पढ़कर बुज़ुर्गाने दीन के नाम नज़र करें। मकसद पूरा होगा।

2. हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा ने एक शख्स को यह वज़ीफा बताया।

शबे मेराज नमाजे तहज्जुद पढ़ें। हर रिकअत में तीन बार सूरए एख्लास पढ़ें बाद सलाम 41 बार दरूद शरीफ पढ़कर दुआ मांगें। दिन में रोजा रखें और इफ्तार के वक्त

या हय्यो या क़य्युमो बे रहमते का अस्तगीसो।

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ

इफ्तार तक पढ़तें रहें । अव्वल आखिर 11-11बार दरूद शरीफ पढ़कर नेक और सालेह औलाद के लिए दुआ करें। अगर साहेबे औलाद नहीं है अल्लाह तआला अपने करम से नेक और सालेह फर्जन्द अता करेगा अगर औलाद है तो नेक बन जायेगी।

2. 26 या 27 रजब को 5 या 7 फकीरों को खाना खिलाएं या रोज़दारों को इफ्तार करवाएं। सालभर कारोबार में बर्कत होगी।

3. बीनी ए मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा रायपुर (छत्तीसगढ़) हज़रत मौलाना शाह मोहम्मद हामिद अली फारूक़ी अलैहिर्रहमा खुद इस रात तहज्जुद के वक्त गुसल फरमाते, साफ कपड़ा खुशबू में बसा

तब्दील फरमाकर 8 रिकअत तहज्जुद इस तरह अदा फरमाते कि हर रिकअत में बाद सूरए फातिहा 3 बार सूरए कौसर और तीन बार सूरए एख्लास पढ़ते। बाद सलाम 1 बार दरूदे ताज शरीफ 1 बार सूरए मुजम्मिल 21 बार सूरए अलम नशरह 100 बार दरूद शरीफ पढ़कर तमाम औलियाए केराम के नाम फातिहा दिलाते और फरमाते कि इसका करने वाला कभी भी तंग दस्त और माली परेशानी का शिकार नहीं होगा।

4. जो कोई इस रात गुस्ल करके दो रिकअत नमाज़े नफिस पढ़े। हर रिकअत में 11, 11 बार सूरए एरव्लास पढ़ें। बाद सलाम 101, बार दरूद पाक पढ़ कर 41 बार यह दुआ पढ़ें-रब्बे ला तज़रनी फरदन व अन्ता खैरूल वारेसीन फिर 101 बार दरूद शरीफ पढ़कर उसे पानी में दम करके आबे ज़म ज़म के कुछ कतरे मिला कर रखलें। और 21 दिन तक उसको सुबह वो शाम पिलायें।

हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि इसकी बर्कत से वो साहेबे औलाद हो जाएगा और अगर अपनी औलाद को पिलाए तो वो नेक फरंमा बरदार बन जाएगी।

5. बाबा फरीद की दुआ–इस रात असली घी का हल्वा बनाकर और कुछ फूल रखकर इस तरह फातिहा दें।

41 बार दरूद शरीफ, 41 बार अयतुल कुर्सी

41 बार सूरए एख्लास फिर 41 बार दरूद शरीफ पढकर

हजरत बाबा फरीद शकर गंज हज़रत मोहसिने

मिल्लत शाह हामिद अली फारुकी और फख्रूल औलिया

हजरत मौलाना फारूक अली साहब फारूकी अलैहेमुर्रहमा के नाम फातिहा दें और फिर अमीरूल मोमेनीन सय्यदना फारूके आज़म रदेअल्लाहो तआला अन्हो के वसीले से बारगोह खुदावन्दी में दुआ करें। फिर हल्वा नमाजियों में या मदरसा के तालिबे इल्मों में बांट दें। और फूल हज़रत मोहसिने मिल्लत या हज़रत फख्रूल औलिया के मजार पर। वहां न हो सके तो किसी भी वली की मजार पर चढा दें।

हजरत मुल्ला कुत्बुद्दीन अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि इस फातिहा की बर्कत से खतरनाक बीमारी से बचा रहेगा। और कुंद जहन बच्चों का दिमाग़ भी तेज़ हो जाएगा।

-: माहे शाबान :-

शाबानुल मोअज़्ज़म की चांद रात में 2-2 रिकअत की नियत से 12 रिकअत नफिल इस तरह पढ़ें कि हर रिकअत में बाद सूरए फातिहा सूरए एख्लास 15 बार। बाद सलाम 101 बार दरूद शरीफ पढ़कर यह तस्बीह 5 बार पढ़ें।

सुब्बूहुन कुद्दूसुन रब्बोना व रब्बुल मलाएकते वर्रूह . सुब्हाना खालेकुन्नूर। सुब्हाना मन हुवा काएमुन अला कुल्ले नफसिन बेमा कसबत।

سُبُّوحٌ وَقُدُّوسٌ رَبَّنَا وَرَبُّ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ ۝
سُبْحَانَ خَالِقِ النُّورِ سُبْحَانَ مَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۝

फिर दुआ मांगें। मक़सद में भी कामयाबी मिलेगी और अज़ाबे दोज़ख से भी निजात मिलेगी।

2. इस माहे मुक़द्दस के आखरी शबे जुमा बाद नमाज़े मग़रिब 2 रिकअत नफिल इस तरह पढ़ें कि हर रिकअत में बाद सूरए फातिहा आयतुल कुर्सी एक बार,

सूरए एख्लास दस बार, सूरए मोअव्वज़तैन 1-1 बार पढें। बाद सलाम 21 बार दरूद शरीफ पढ़कर औलियाए केराम और तमाम मोमेनीन वो मोमिनात की अर्वाह को बख्श दें। जिस से न सिर्फ साल भर बर्कत रहेगी बल्कि इस दौरान मौत वाके हुई तो ईमाम की सलामती भी मिलेगी।

3. दो-दो रिकअत नफिल की नियत से 8 रिकअत नफिल इस तरह पढ़ें कि बाद लहम्दो 11 बार कुल हो अल्लाहो पढ़ें बाद सलाम 101 बार दरूद शरीफ पढ़ें फिर उसका सवाब खातूने जन्नत सय्येदा 'तय्येबा' ताहिरा हज़रत फातेमातुज़ ाहरा रदेअल्लाहो तआला अन्हा की बारगाह में नज़र करने वाले के लिए बशारत है कि न सिर्फ सय्यदा खातूने जन्नत की उन्हें शेफाअत मिलेगी बल्कि वो उनके साथ जन्नत में भी जाएगा।

4. 14 या 15 शाबान को बाद नमाजज़ ज़ोहर 4 रिकअत नमाज़े नफिल इस तरह पढ़ें कि हर रिकअत में

.बाद फातिहा सूरए एख्लास, सूरए फलक और सूरए नास 1-1 बार पढ़ें।

बाद सलाम सूरए इज़ा जाआ 41 बार पढ़कर पानी में दम कर लें। हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि जिस मरीज़ को यह पानी पिलाया जाएगा उसे शेफा मिलेगी और जिस घर या दुकान में यह पानी इस तरह छिडकें कि पैरों में न आएं वो घर और दुकान जिन, भूत, प्रेत और जादू टोना से महफूज़ रहेगी।

5. सूरज डूबने से पहले 41 बार पढ़ें लाहौला वला कुव्वता इल्लाह बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम।

6. 14 शाबान को बाद नमाज़ मगरिब 6 रिकअत नफिल 2-2 रिकअत की नियत से इस तरह अदा करे कि पहले दराजिये उम्र फिर रिज़्क में बर्कत, फिर रद्दे बला। हर सलाम के बाद सूरए यासीन 1 बार पढ़ें। आखरी बार सूरए यासीन के बाद यह दुआ पढ़ें।

(7) सात बार सूरए दुखान इस तरह पढ़ें कि अव्वल

वो आखिर 11-11 बार दरूद शरीफ पढ़ें आखिर मे
सलात वो सलाम पढ़कर दुआ करें। कामयाबी मिलेगी।

(8) इस रात आंखों में सुरमा लगाएँ और यह दुआ
पढ़ें ''फक शफ ना अन का गेता अका फब सरोकत यौमा
हदीद'' हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा ने एक
साहब को यह वज़ीफा बताया। कहते हैं कि इसकी बर्कत
से न सिर्फ आंख की रौशनी बढ़ गई बल्कि दर्द और
तकलीफ भी दूर हो गई।

(9) 14 शाबान को सय्यदना हज़रत अमीर हमज़ा
और सय्यदना हज़रत खातूने जन्नत (रिदवानुल्लाह
तआला अलैहिम अजमईन) के नाम फातिहा दिलाएं और
खानदान के तमाम मर्हूमीन के नाम ईसाले सवाब खुद
करें। कुछ लोग फातिहा दूसरों से करवाते हैं अगर खुद
करें तो ज्यादा फाएदा हासिल होगा।

उर्स वो फातिहा माहे शाबान

2 विसाल इमामे आज़म रदेअल्लाहो तआला अन्हो

3 विलादते मुबारेका सय्यदना ईमामे हुसैन रदेल्लाहो तआला अन्हो

11 उर्स मखदूम अहमद यहया मुनेरी रदेअल्लाहो तआला अन्हो

29 विलादते तय्येबा सय्यदना हुज़ूर ग़ौसेपाक रदेअल्लाहो तआला अन्हो

26 उर्स मोहसिने मिल्लत

27 जश्ने दस्तारे फज़ीलत मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन व दारूल यतामा रायपुर छ.ग.

दुआ निस्फे शाबान

अल्ला हुम्मा या ज़ल मन्ने वला यमुन्नो अलै। या ज़ल जलाले वल इकराम। या ज़त्तवले वल इन आम। लाइलाहा इल्ला अन्ता ज़हरल लाज़ीना व जारल मुस्तजेरीना व अमानल खाऐफीना अल्लाहुम्मा इन कुन ता कतब तनी इन्दका फी उम्मिल किताबे शकीय्यन अव महरूमन अव मतरूदन अव मुकत्तरन अलय्या फिर्रिज़्के फम्हो।

अल्लाहुम्मा बे फदलेका शकावती व हिर्मानी व तरदी वक तारा रिज़क़ी व अस्बितनी इन्दका फी उम्मिल किताबे सईदन मरज़ुक़न मोवफ्फेकन लिल खैराते। फइन्नका कुल ता व कौलोकल हक़्को फी किताबे कल मुनज़्ज़ले अला लेसानेका नबिय्येकल मुर्सले यम हुल्लाहो मा यशाओ व युस्बेतो। व इन्द हू उम्मुल किताबे। इलाही बित्त जल्लियिल आज़मे फी लैलतिन निस्फे मिन शहरे शाबानिल मुकर्रमिल्लती युफरको फीहा कुल्लो अमरिन हकीम। व युबरमो अन तक शेफा अन्ना मिनल बलाए वल बलवाए मा तअलमो वमा ला नालमो। वमा अन्ता बेही आलमो। इन्नका अनतल आ अज़्ज़ुल अकरमो। व सल्लल्लाहो तआला अला सय्यदना मोहम्मदिन व अला आलेही व अस्हाबेही वसल्लिम। वल हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीना।

دعائے نصف شعبان المعظم

اَللّٰھُمَّ یَا ذَا الْمَنِّ وَلَا یَمُنُّ عَلَیْہِ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَامِ یَا ذَا الطَّوْلِ
وَالْاِنْعَامِ لَآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ ظَھْرَ اللَّاجِئِیْنَ وَجَارَ الْمُسْتَجِیْرِیْنَ وَ
اَمَانَ الْخَآئِفِیْنَ اَللّٰھُمَّ اِنْ کُنْتَ کَتَبْتَنِیْ عِنْدَکَ فِیْ اُمِّ الْکِتٰبِ شَقِیًّا
اَوْ مَحْرُوْمًا اَوْ مَطْرُوْدًا اَوْ مُقَتَّرًا عَلَیَّ فِی الرِّزْقِ فَامْحُ اللّٰھُمَّ بِفَضْلِکَ
شَقَاوَتِیْ وَحِرْمَانِیْ وَطَرْدِیْ وَاِقْتَارَ رِزْقِیْ وَاَثْبِتْنِیْ عِنْدَکَ فِیْ اُمِّ
الْکِتٰبِ سَعِیْدًا مَرْزُوْقًا مُوَفَّقًا لِلْخَیْرَاتِ فَاِنَّکَ قُلْتَ وَقَوْلُکَ الْحَقُّ
فِیْ کِتَابِکَ الْمُنَزَّلِ عَلٰی لِسَانِ نَبِیِّکَ الْمُرْسَلِ یَمْحُوا اللّٰہُ مَا یَشَآءُ وَ
یُثْبِتُ وَعِنْدَہٗ اُمُّ الْکِتٰبِ اِلٰھِیْ بِالتَّجَلِّی الْاَعْظَمِ فِیْ لَیْلَۃِ النِّصْفِ
مِنْ شَھْرِ شَعْبَانَ الْمُکَرَّمِ الَّتِیْ یُفْرَقُ فِیْھَا کُلُّ اَمْرٍ حَکِیْمٍ وَّیُبْرَمُ اَنْ
تَکْشِفَ عَنَّا مِنَ الْبَلَآءِ وَالْبَلْوٰی مَا تَعْلَمُ وَمَا لَا نَعْلَمُ وَمَآ
اَنْتَ بِہٖ اَعْلَمُ اِنَّکَ اَنْتَ الْاَعَزُّ الْاَکْرَمُ وَصَلَّی
اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِہٖ وَاَصْحَابِہٖ وَسَلَّمَ
وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝

-: रमज़ानुल मुबारक :-

1. चांद रात में सूरए इन्ना फतहना पढ़ने से साल भर मुसीबतों और परेशानियों से इन्सान बचा रहता है।

2. आधी रात को आस्मान की तरफ मुंह करके 11 बार या 21 बार कहें।

लाईलाहा इल्लल्लाहो अल हय्युल कय्युमोल काएमो अला कुल्ले नफसिन बेमा कसाबत

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ قَائِمٌ عَلٰی کُلِّ نَفْسٍ بِمَا کَسَبَتْ

3. 21 रमज़ान को बाद नमाजे ईशा 4 रिकअत नमाज़े नफिल इस तरह पढ़ें कि बाद सूरॅए फातिहा 11 बार सूरए एख्लास पढ़ें। सलाम के बाद 100 बार दरूद शरीफ पढ़कर 41 बार सूरए अलम नशराह الم نشرح 41 बार सूरए इन्ना अनज़लना انا انزلناہ फिर 100 बार

दरूद शरीफ पढ़कर मौलाए काएनात मौला अली मुश्किल कुशा रदेअल्लाहो तआला अन्हो की बारगाह में नज़र करें। हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा का कहना है कि इस वज़ीफे से बेशुमार बर्कतें हासिल होती हैं और सय्यदना मौला अली मुश्किल कुशा रदेअल्लाहो तआला अन्हो की खुसूसी नजरें करम पढ़ने वाला पाता है।

4. 17 रमजान शोहदाए बदर की तारीख है। उस दिन 313 बार सूरए एख़लास पढ़कर उनकी अर्वाहे तय्येबात को नज़र करें। आज दीने इस्लाम की सारी बर्कतों में उनका खून शामिल है। अगर उन्होंने उस वक्त कुर्बानियां नहीं दी होतीं तो आज हमें कलमा नसीब नहीं होता। मस्जिदों से अज़ान की आवाज़ सुनाई नहीं देतीं। यह सब उनकी कुर्बानियों का नतीज़ा है कि आज इस्लाम का यह गुलशन इस तरह महेक रहा है। इसलिए उस दिन उनके नाम खास तौर पर फातिहा का एहतिमाम करें।

हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि उस दिन जो कोई अपनी पाकीा कमाई से खीर पकवाकर 100 बार दरूद शरीफ 41 बार अल्हम्दो शरीफ पढ़कर शोहदाए बदर के नाम फातिहा दिलाऐं फिर उनका नाम लेकर पानी में दम करके रख लें। मिर्गी आसेब या दिमागी खलल और पागलपन की जिसे बीमारी हो उसे सुबह 7 दिन या 21 दिन तक वह पानी पिलाएं। इन्शाअल्लाह तआला शोहदाए बदर के नाम की बर्कत से उसे शेफा मिलेगी।

5. सूरज डूबने से पहले 41 बार पढ़ें–

लाहौल वला कुव्वता इल्ला बिलाहिल अलीयिल अज़ीम

لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّابِاللّٰهِ الْكَبِيْرِ الْمُتَعَالِ

-: वज़ाएफ़ शबेक़द्र :-

1. 4 रिकअत नफिल पढ़ें। हर रिकअत में बाद सूरए फातिहा सूरए इन्नअनज़लनाहो انا انزلناہ एक बार सूरए अख्लास 27 बार पढ़ें। बाद सलाम 21 बार दरूदे इब्राहिमी पढ़कर दुआ मांगें।

2. मौलाए काएनात मौला अली मुश्किल कुशा रदेअल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि शबेकद्र 2 रिकअत नमाज़े नफिल इस तरह पढ़ें कि हर रिकअत में बाद सूरए फातिहा, सूरए इन्नाअन्ज़लनाह انا انزلناہ एक बार सूरए अख्लास 100 बार पढ़ें। बाद सलाम 11 बार दरूद शरीफ भी पढ़ें।

3. सूरए अंकबूत عنکبوت और सूरए रूम روم एक बार पढ़ें अव्वल आखिर 11-11 बार दरूद शरीफ पढ़कर रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह में नज़र करें।

4. 2 रिकअत नफिल इस तरह पढ़ें कि हर रिकअत में बाद सूरए फातिहा 100 बार सूरए एख्लास पढ़ें। बाद सलाम 100 बार दरूद शरीफ फिर सलात वो सलाम

पढ़कर दुआ मांगें।

5. 4 रिकअत नफिल एक सलाम से इस तरह पढ़ें कि बाद सूरए फातिहा इन्ना अन्ज़लनाहो انا انزلناه एक बार सूरए अख्लास اخلاص 27 बार। इन्शाअल्लाह तआला उसके गुनाह बख्श दिये जायेंगे।

6. अल्लाहुम्मा इन्नका अफवुन तोहिब्बुल अफ्वा फाफो अन्नी कसरत से पढ़ें।

اللهم انك عفو تحب العفو فعف عنی

7. हज़रत मोहसिने मिल्लत शाह हामिद अली साहब फारूकी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि जो शख्स इस रात 11 बार दरूदे ताज पढ़कर बुजुर्गाने दीने के नाम ईसाले सवाब करे। फिर रिज़्क में बर्कत, मुकद्दमा में कामयाबी और कारोबार में तरक़्क़ी के लिए दुआ करे। अगर 21, 23, 25 27 और 29 रमज़ान की तमाम रातों में इसे पढ़कर पानी में दम करके 7 रोज़ तक मरीज़ों को पिलाएं तो मर्ज भी दूर होगा और जिन बच्चों को यह पानी पिलाया जायेगा उनका ज़ेहन भी तेज़ होगा।

8. 29वीं रमज़ान को बाद ईशा 4 रिकअत नफिल इस तरह पढ़ें कि बाद सूरए फातिहा 11-11 बार आयतुल

कुर्सी या सूरए इन्न अन्ज़लनाहो انا انزلناہ पढ़ें। बाद सलाम 101 बार दरूद शरीफ 141 बार सूरए अलकौसर سورہ الکوثر

फिर 11 बाद दरूद शरीफ पढ़कर दुआ मांगें।

हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि कारोबार और सर्विस की तरक़्क़ी के लिए यह वज़ीफा निहायत कार आमद है। अगर इसे पढ़कर वालेदैन ज़िन्दा हों तो उनकी कमदबोसी करें और दुनिया से रूखस्त हो गये हों तो उनके नाम इसाले सवाब करके दुआ करें। दुआ मक़ऋ५

बूल होगी। औलाद ना फरमान है और शौहर बेपरवाह है तो वो फरमाबरदार और नेक बन जायेगा।

उर्स वो फातिहा रमज़ानुल मुबारक

4 विसाल सय्येदा तय्येबा ताहेरा हज़रते फातिमा रदेअल्लाहो तआला अन्हो

10 विसाल उम्मुल मोमेनीन हज़रत खदीजतुल कुबरा रदेअल्लाहो तआला अन्हो

17 फातिहा शोहदाए बदर

21 शहादत अमीरूल मोमेनीन मौलाए काएनात सय्येदना हज़रत अली शेरे खुदा रदेअल्लाहो तआला अन्हो

27 नूज़ूले कुर्आने वो शबे कदर

-: माहे शव्वाल :-

1. इस माह में ईद के बाद छह रोज़ा रखें। हर रोज़ इफ्तार के वक्त 41 बार या गयासल मुसतगसीना बे रहमते का अस्तगीसो يَاغِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ पढ़ें। अव्वल आखिर 11-11 बार दरूद शरीफ पढ़कर दुआ मांगें।

2. शव्वाल की चांद रात में 4 रिकअत नमाज़ नफिल पढ़ें। जिसमें बाद सूरए फातिहा सूरए एख्लास और सूरए मोअव्वज़तैन 3-3 बार पढ़ें। बाद सलाम कल्मए तमजीद 70 बार पढकर दुआ करें मकसद में कामयाबी मिलेगी।

3. हज़रत सय्यदना सुलैमान फारसी रदिअल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं कि ईद की नमाज़ के बाद घर में 4 रिकअत नफिल इस तरह पढ़ें कि बाद सूरए फातिहा पहली रिकअत

में सब्बेहिस्मे سبح اسم

दूसरी में वश्शम्स والشمس

तीसरी में वद्दोहा والضحیٰ

चौथी में सूरए एख्लास 1-1 बार पढ़ें या हर रिकअत में सूरए फातिहा के बाद सूरए एख्लास 3-3 बार पढ़ें। उसकी बर्कत से 70 बरस के गुनाह बख्स दिये जायेंगे।

उर्स वो फातिहा शव्वालुल मुकर्रम

1 ईदुल फितर जिसे कैलेंडर और टी.वी. देखकर नहीं बल्कि चांद देखकर मनाइये।

6 फातिहा हज़रत ख्वाजा उस्माने हारूनी रदेअल्लाहो तआला अन्हो (पीर वो मुर्शिद सुल्तानुल हिन्द ख्वाजा गरीब नवाज़ रदेअल्लाहो तआला अन्हो)

10 विलादत ईमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरेलवी रदेअल्लाहो तआला अन्हो

17 उर्स हज़रत अमीर खुसरो देहली

-: माहे ज़ी क़अदह :-

1. हर रात 2-2 रिकअत नफिल पढ़ें। जिसमें बाद सूरए फातिहा 3-3 बार सूरए एख्लास पढ़ें। बाद सलाम 11 बार दरूद शरीफ और 41 बार इस्तगफार पढ़ें।

2. नवचंदी जुमरात को बाद ईशा 2 रिकअत नफिल इस तरह पढ़ें कि बाद फातिहा आयतुल कुर्सी 3 बार या सूरए एख्लास 11 बार पढ़ें बाद सलाम 101 बार दरूद शरीफ और 41 बार हस्बोनल्लाहो वा नेमल वकील حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ पढ़कर पानी में दम कर लें। हजरत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा का फरमान है कि शराबी और जुवाड़ी या बीवी से नफरत करने वाले शौहर को 7 दिन तक पिलाया जाये तो न सिर्फ उनकी गलत आदतें छूट जायें

बल्कि नफरत मोहब्बत में बदल जाये।

उर्स वो फातिहा ज़ीक़ादा

2 उर्स सदरू१शरिआ (मुसन्निफ बहारे शरीअत) धोसी

11 फातिहा शहेंशाह औरंगजेब अलैहिर्रहमा

27 फातिहा सय्यदना हज़रत अमीर हम्ज़ा वो शोहदाए ओहुद

(रिज़वानुल्लाहे अलैहिम अजमईन)

-: माहे ज़िलहिज्जा :-

1. ज़िल हिज्जा की सातवीं और आठवीं रात में 16 रिकअत नमाज इस तरह पढ़ें कि बाद सूरए फातिहा 1 बार आयतुल कुर्सी 15 बार सूरए एख्लास पढ़ें। सलाम के बाद 41 बार दरूद शरीफ पढ़कर दुआ मांगें।

2. शबे अर्फा 4 रिकअत नमाज़े नफिल इस तरह पढ़ें कि हर रिकअत में सूरए इन्ना अन्ज़लनाह 3 बार और सूरए एख्लास 21 बार पढ़ें बाद सलाम 70 बार इस्तिग़फार पढकर 11 बार दरूद शरीफ पढ़ें और दुआ करें।

3. बरोजज़ अर्फा ज़ोहर वो असर के दर्मियान नमाज़ नफिल पढ़ें। हर रिकअत में सूर ए फातिहा के बाद सूरए अख्लास 50-50 बार पढ़ें। बाद सलाम 41 बार दरूद शरीफ पढ़कर दुआ मांगें।

4. इस माह की पंद्रह तारीख को बाद नमाज़े असर 101 बार दरूद शरीफ पढ़कर 141 बार या *गयासल मुस्तगसीना बेरहमते का अस्तगीसो* يَاغِيَاثَ الْمُسْتَغِيْثِيْنَ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ 11 बार *हस्बोनल्लाहो व नेमल वकील* حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ 11 बार *इलाही खैर गर्दानी बहक्के शाही जीलानी* الٰہی خیر گردان بحق شاہ جیلانی फिर 41 बार दरूद शरीफ़ पढ़कर बुजुर्गाने दीन के नाम फातिहा दिलाएं। बाद मगरिब 3 ग़रीब वो मिस्कीन को खाना खिलाएं। अगर वो नमाज़ी हो तो और बेहतर है।

हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा से मंकूल है कि आप जिस भी मकसद के लिए इसे करेंगे। उसमें कामयाबी मिलेगी। खुसूसन मुकद्दमा में कामयाबी और सर्विस में तरक्की

के लिए यह निहायत मुजर्रब वज़ीफा है।

3. इस माह की 18 तारीख को खान-ए-काबा की तामीर मुकम्मल हुई थी। इसलिए उस दिन 4 रिकअत नफिल 2-2 रिकअत की नीयत से पढ़ें। नमाज़ पूरी होने के बाद 3-3 बार आयतुल कुर्सी और 1 बार सूरए मुज़म्मिल पढ़ें वो तमाम हुज्जाजे केराम जो दुनिया से रूखसत हो गये हैं उनके नाम ईसाले सवाब करें। इन्शा अल्लाह तआला वो भी हज की बर्कतों से मालामाल होगा।

4. अरफा के दिन या रात मे किसी वक्त 100 बार यह दुआ पढे

लाईलाहा इल्लल्लाहो वह दहू ला शरीका लहू लहुल मुलको वहुवा अला कुल्ले शैइन कदीर।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

फिर सूरए एख्लास सौ बार पढ कर 100 बार इसे पढे।

सुब्हानल्लाहे वल हम्दोलिल्लाहे वल्लाहो अकबर –
अल्लाहो अकबर व लिल्लाहिल हम्द –

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ قَائِمٌ عَلٰی کُلِّ نَفْسٍ بِمَا کَسَبَتْ

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَکْبَرُ وَاللّٰهُ اَکْبَرُ وَ

फिर सौ बार इस्तगफार और सौर बार दरूद शरीफ पढ कर दुआ माँगे ।

उर्स वो फातिहा माहे जिलहिज्जा

3 उर्स कुतबे मदीना हज़रत मौलाना जियाउद्दीन साहब मदीनए मुनव्वरा.

18 शहादत अमीरूल मोमेनीन सय्यदना उस्माने गनी रदेअल्लाहो तआला अन्हो

26 शहादत अमीरूल मोमेनीन सय्यदना फारूके आज़म रदेअल्लाहो तआला अन्हो।

फातेहा का तरीका

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

(कुल या अय्युहल काफिरुन ला आबुदू मा तअबुदून वला अनतुम आबिदु-न मा अअबुदू वला अना आबिदुम माअबत -तुम वला अनतुम आबिदू-न अअबुद लकुम दीनुकुम वलि-य दीन) एक बार

बिस्मिला बिर्रहमा निर्रहीम

(कुल हुवल्लाहु अहद अल्ला हुस्समद लम यलिद वलम यूलद वलम यकुल्लहु कुफवन अहद) इसे तीन बार पढे

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

(कुल अऊज़ो बिरब्बिल फलक़ मिन शर्रे मा खलक व मिन शर्रे गासिक़िन इज़ा वक़ब व मिन शर्रे नफ्फा साते फिल ओ-क़-दि व मिन शर्रे

हासिदिन इज़ा हसद) एक बार पढे ।

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहिम

कु ल आऊज़ो बेरब्बिन्नास मलेकिन्नास इला-हिन्नासि निम शर्रिल वस वासिल खन्नासिल लज़ी युवस विसुफी सुदू रिन्नासे मिनल जिन्नते वन्नास)

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

अल हम्दु लिल्लाहे रब्बिल आल मीन अर्रहमा निर्रहीम मालिकि यव मिद्दीन इय्याक नअबुदू व इय्याक नस्तईन इहदिनस सिरातल मुसतकीम सिरातल लज़ीना अन अम - त अलयहिम गयरिल मग़दूबि अलयहिम वलद्दाल्लीन (आमीन) एक बार पढे ।)

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहिम

(अलिफ लाम मिम ज़ालिकल किताबु लारय ब फीहे हुदल लिल मुत्तक़ीनल्लज़ी -न युवमिनू- न बिल

ग़यबि व योक़ीमूनस्सला-त व मिम्मा रज़क़्नाहुम युन फेक़ून वल्लज़ीना यु मिनूने बेम उनज़ि - ल इलय क़ वमा उनज़िला मिन क़बलिक व बिल आखिरति हुम यूक़िनू -न उलाए -क अला हुदम मिर रब्बिहिम व उलाए - क हुमुल मुफलिहु - न व इला हुकुम इलाहुँ वाहिदुल्ला इला - ह इल्ला हुवर्रह - मानुर रहीम। इन्ना रहमतल्लाहे क़रीबुम मिनल मोहसेनीन वमा अर सलना का इल्ला रहमतल लिल आलमीन माकाना मोहम्मदुनअबाअहदिम मिनरेजालकुम वलाकिर्रसूलल्लाहे व खातमन्नबीयीन व कानल्लाहो बेकुल्ले शैइन अलीम। इन्नल्लाहा वमलाएकतहू योसल्लूना अलन्नबीय या अय्योहललज़ीना आमनुसल्लु अलैहे वस्ल्लेमू तस्लीमा। अल्लहुम्मा सल्लेअला सैयदना मुहम्मदिव व अला आले सैय्यदिना मुहम्मदिँ व बारिक वसल्लिम। सुब्हाना रब्बेका रब्बिलइज़्ज़ते अम्मायसेफना व सलामुन अलल मूरसलीन वलहम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन)। इसके बाद हाथ उठाकर इसाले सवाब करें।

इसाले सवाब का तरिक़ा :-

बुज़ुर्गा ने दीन औलियाए केराम मखदुम पाक आला हज़रत या हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा के नाम फातिहा हो तो अदब से खड़ा होकर बारगाहे खुदा वन्दी मे अर्ज़ करें। या अल्लाह मैने अभी जो कुछ पढा और जो पहले दरूद शरीफ कलमा शरीफ कलाम पाक पढा जो कुछ शिरनी पानी वगैरा हाज़िर है उसको अपनी बार गाह मे कुबुल फरमा। पढने मे एहतेमाम करने मे , जाने अन्जाने मे जो गलती हुई उसको माफ फरमा दे। इसका सवाब प्यारे मुस्तफा गम्बदे खज़रा के ताजदार हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहे वस्सलम की बारगाह मे नज़्र है। आप की आल औलाद तमाम अज़वाजे मोतहहेरात की अर्वाह को पहुचे जंगे बद्र ,जंगे ओहद , शहीदाने करबला कि अर्वाह को इसका सवाह पहुचे। तमाम अम्बियाए मुर्सलीन अलैहिस्सलाम तमाम सहाबा -ए केराम, ताबेईन , तबे ताबेईन की अर्वाहे को सवाब अता फरमा, गौसुल आजम पीराने पीर शेख अब्दूल कादिर जिलानी रदि अल्लाहो तआला अन्हो , नाएबे रसूल फखरे हिन्दुस्तान ख्वाजा गरीब नवाज़ रदिअल्लाहो तआला अन्हो को इस का सवाब पहुचे और सिलसिल-ए, अलिया कादरिया रिज़विया अशरफिया चिश्तिया वारसिया , अज़ीज़िया

सोहरवार्दया के जितने मशाएख दुनिया से जा चुके है तमाम की अर्वाहे तय्येबात को इसका सवाब पहुंचे तमाम मुस्लेमीन वल मुस्लेमात की रुहे पाक को पहुंचकर खुसुसियत के साथ फलां -फलां (जिनके नाम फातेहा देना हो उसका नाम ले) को पहुंचे आम लोग मे से हो तो उनके लिए मगफेरत की दुआ करे। अल्लाह उन्हे जन्नतुल फिरदौस मे जगह अता फरमाए तमाम गुनाहो को माफ फरमा दे। उनकी औलाद को नेक काम करने की तौफीक़ अता फरमा। और अगर औलिया एकराम के नाम की फातेहा हो तो उनके वसीले से दुआ मांगे। कि अल्लाह तआला सारे आलमे इस्लाम की हिफाज़त फरमाए मुसलमानों को नेक काम की तौफीक़ अता फरमाए। तमाम सुन्नी मदरसों को खासकर मदरसा इस्लाहुल मुस्लेमीन मुस्लिम यतीम खाना रायपुर की हिफाज़त फरमाए। उसके बानी को जन्नतुल फिरदौस में आला से आला मर्तबा अता फरमाए और हम सब को दोनों जहान में कामयाबी अता फरमाए। इसके बाद-इन्नाल्लाहो व मलाएकताहू योसल्लू न अलन नबिये या अय्यीहल लज़ीना आमनू सल्लू अलैहे वसल्लेमू तसलीमा पढ़ें। सभी मौजूद लोग और खुद भी अल्लाहुम्मा सल्ले अला सैय्यदना मोहम्मदिव व आलेही व साहबेही व बारिक वसल्लिम पढ़कर दोनों हाथ चेहरे पर फेर लें।

पंज गंज क़ादरिया

बाद फजिर 100 बार या अज़ीज़ो या अल्लाह
बाद जोहर 100 बार या करीमो अल्लाह
बाद असर 100 बार या जब्बारो या अल्लाह
बाद मग़रिब 100 बार या सत्तारो या अल्लाह
बाद ईशा 100 बार या ग़फ्फारो या अल्लाह अव्वल वो आखिर 1,1, बार दरूद शरीफ

पंज गंज मोहसिने मिल्लत

बाद फजिर 100 बार दरूद शरीफ
बाद जोहर 100 बार इस्तिगफार
बाद असर 100 बार सुब्हानल्लाहे वलहम्दो लिल्लाहे वल्लाहो अकबर
बाद मगरिब लाहौल वला कुव्वता... 100 बार
बाद ईशा 100 बार कल्म ए तय्येबा
(ज़िक्रे खैर जितना ज़यादा हो सके करें)

हर चांद की 11 तारीख में बड़े पीर सय्यदना ग़ौसे पाक, 6 तारीख में सुल्तानुल हिन्द सय्यदना ख्वाजा गरीब नवाज़ 26 तारीख में मोहसिने मिल्लत शाह हामिद अली साहब फारूक़ी के नाम फातिहा जरूर दिलाएं।

अहदनामा

बिस्मिल्लाह हिर्रहमान निर्रहीम

अल्लाहुम्मा फातेरस्समावाते वल अर्दे आलेमल गैबे वश शहादते अंतर्रहमानुर्रहीम। अल्लाहुम्मा इन्नी अहदो इलैका फी हाज़ेहिल हयातिद दुनिया। व अश्हदो अन लाइलाहा इल्ला अनता वहद का ला शरीक ल क व अश्हदो अन्ना मोहम्मदन अबदोका व रसूलोका फला तकिलनी एला नफसी फइन्न क इन तकिलनी ऐला नफसी तोकर्रिबनी एलश्शर्रे व तोबा इदनी मिनल खैरे व इन्नी ला अत तकेलो इल्ला बे रहमतेका फज अल ली इनदक अहदन तो वफफीहे इला यौ मिल कयामते - इन न का ला तुखले फुल मीआद व सल्लल्लाहो तआला अला खैरे खलकेही मोहम्मदिव्व आलेही व अस्हाबेही अजमईन बे रहमते का या अरहमर्राहेमीन

عہد نامہ

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَللّٰھُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عَالِمَ
الْغَیْبِ وَالشَّھَادَۃِ اَنْتَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ
اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَعْھَدُ اِلَیْکَ فِیْ ھٰذِہِ الْحَیٰوۃِ
الدُّنْیَا وَاَشْھَدُ اَنْ لَّآ اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ وَحْدَکَ
لَاشَرِیْکَ لَکَ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُکَ
وَرَسُوْلُکَ فَلَاتَکِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ فَاِنَّکَ
اِنْ تَکِلْنِیْ اِلٰی نَفْسِیْ تُقَرِّبْنِیْ اِلَی الشَّرِّ
وَتُبَاعِدْنِیْ مِنَ الْخَیْرِ وَاِنِّیْ لَآ اَتَّکِلُ اِلَّا
بِرَحْمَتِکَ فَاجْعَلْ لِیْ عِنْدَکَ عَھْدًا تُوَفِّیْہِ
اِلٰی یَوْمِ الْقِیٰمَۃِ اِنَّکَ لَاتُخْلِفُ الْمِیْعَادَ وَصَلَّی
اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی خَیْرِ خَلْقِہٖ مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ وَ
اَصْحٰبِہٖ اَجْمَعِیْنَ بِرَحْمَتِکَ یَا اَرْحَمَ الرّٰحِمِیْنَ

शजर-ए-आलिया कादरिया

या इलाहो रहम फरमा मुस्तफा के वास्ते।
या रसूलल्लाह करम कीजिए खुदा के वास्ते
मुश्किले हल कर शहे मुश्किल कुशा के वास्ते।
कर बलाएं रद शहीदे करबला के वास्ते
सैय्यदे सज्जाद के सदके में साजिद रख मुझे ।
इल्मे हक़ दे बाक़रे इल्मे हुदा के वास्ते
सिद्क सादिक़ का तसद्दुक सादिकुल इस्लामकर ।
बे गज़ब राज़ी हो काज़िम और रज़ा के वास्ते
बहरे मारूफो सरी मारुफो दे बेखुद सरी।
जुन्दे हक में गिन जुनैदे बासफा के वास्ते
बहरे शिबली शेरे हक़ दुनिया के कुत्तों से बचा ।
एक का रख अब्दे वाहिद बेरिया के वास्ते
बुल फरह का सदक़ा कर गम को फरह दे हुस्नोसअद ।
बुल ''हसन और बूसईदे'' सअदजा के वास्ते
कादरी कर कादरी रख कादरियों में उठा।
क़द्र अब्दिल कादिरे कुदरत नुमा के वास्ते
अहसनल्लाहो लहू रिज्कन से दे रिज़के हसन ।
बन्दए रज़्ज़ाक़ ताजुल असफिया के वास्ते
नस्रबी स्वालेह का सदक़ा स्वालेहो मन्सूर रख ।
दे हयाते दीन मोहये जां फिज़ा के वास्ते
तूरे इरफानो उलुव्वों हमदो हुस्ना ओ बहा ।
दे अली मूसा हसन अहमद बहा के वास्ते
बहरे इब्राहीम मुझ पर नारे गम गुलज़ार कर।
भीक दे दाता भिकारी बादशाह के वास्ते

खानए दिल को ज़ियादे रूए इमां को जमाल ।
शहे ज़िया मौला जमालुल औलिया के वास्ते
दे मोहम्मद के लिए रोज़ी कर अहमद के लिए ।
ख्वाने फज़लुल्लाह से हिस्सा गदा के वास्ते
दीनो दुनिया की मुझे बरकात दे बरकात से ।
इश्के हकदे इश्की इश्के अन्तुमा के वास्ते
हुब्बे अहले बैत दे आले मोहम्मद के लिए ।
कर शहीदे इश्क हमजा पेशवा के वास्ते
दिल को अच्छा तन को सुथरा जान को पुरनूर कर
अच्छे प्यारे शमशेदीने बदरूल उला का वास्ते
दो जहां में खादिमे आले रसूलिल्लाह कर ।
हजरते आले रसूले मुकतदा के वास्ते
नूरे जान वो नूरे ईमान नूरे कब्र वो हश्र दे
बुल हुसैने अहमदे नूरी लेका के वास्ते
कर अता अहमद रज़ाए अहमदे मुसल मुझे ।
मेरे मौला हज़रते अहमद रज़ा के वास्ते
आवरु रखिये शहे हामिद वा फारूक की तू ए खुदा
सब रसूलों के लिये कुल औलिया के वास्ते
बहरे महबूबां मोहम्मद अली रा खुदा पनाह ।
दे खुदाया खुद शहेरोज़े जज़ा के वास्ते
सदका इन आयान का दे छै ऐन इज़ इल्मो अमल ।
अफ्व इर्फान आफियत इस वेनवा के वास्ते

. . . . . .

. . . . . .

शिजर-ए तय्यबा चिश्तिया फरीदिया हामिदिया

महक अल्लाह वाला बन खुदा के वास्ते
वक़्फ कर दे ज़िन्दगी रब्बुल ऊला के वास्ते
ऐ खुदा अपनी मोहब्बत अपना इरफाँ दे मुझे
रहमते आलम मोहम्मद मुस्तफा के वास्ते
हर मुसलमां को कर अता जज़बये शौके जेहाद
मुर्तुज़ा खैबर शिकन शेरे खुदा के वास्ते
अय खुदा सदक़ा हसन बसरी के इज़ो जाह का
रूहे पाके अब्दे वाहिद पारसा के वास्ते
क़ादिरे मुतलक़ पये ख्वाजा फजले इब्ने अयाज़
ख्वाजा इब्राहीम ताजुला औलिया के वास्ते
अजमते ख्वाजा हुज़ैफा का तसद्दुक़ अय खुदा
इज़्ज़ते ख्वाजा हबीरा बासफा के वास्ते
ख्वाजा मुमशाद दिनोरी का सदक़ा अय करीम
ख्वाजये इस्हाक़ शामि हक़ नुमा के बास्ते
अहमदे अबदाल व ख्वाजा बू मोहम्मद का तुफैल
ख्वाजये बुयुसूफे हुसैन दिल रूबा के वास्ते
ख्वाजा मौदूद शरीफ ज़िन्दानी का वास्ता
ख्वाजये उस्मान ईमामुल अतकिया के वास्ते
ख्वाजये दुनिया व दीन ख्वाजये मोईनुद्दीन हसन
ख्वाजये हिन्दल वली दोसरा के वास्ते
बहरे कुतबुद्दीन पै गंजे शकर बाबा फरीद
ख्वाजये सुल्तानुल मशायेख मुक़तदा के वास्ते
वास्ता मौला नसीरूद्दीन कमालुद्दीन का

हज़रत ख्वाजा सिराजुल असफिया के वास्ते
बहरे इल्मुदीन व महमूद जमालुद्दीन वली
शेख मौलाना हसन पीरे होदा के वास्ते
अजपये ख्वाजा मोहम्मद आज़म अये परवरदिगार
ख्वाजा यहया सदरे बज़्मे अज़ किया के वास्ते
अज पये शेख कलीमुल्ला अये रब्बुल उला
हज़रत ख्वाजा निजामे बासफा के वास्ते
वास्ता मौलाना फखरूद्दीन चिश्ती का ऐ करीम
हजरते शाहे अज़ीम पेशवा के वास्ते
अज़पये सैय्यदे हुसैन बहरे शरफुद्दीन शहीद
ख्वाजये सैय्यद जुबैरे बासफा के वास्ते
वास्ता क़ासिम अली का पीर इलाही बख्श का
मर्द हक अब्दुल अजीज रहनुमा के वास्ते
मोहसिने मिल्लत पिया का सदक़ा ऐ रब्बे करीम
हज़रते फारूक़ अली फख्रूल औलिया के वास्ते
हज़रते कुतबे ज़माना शाह कुतबुद्दीन का
हम को हो सदका अता अहदो वफा के वास्ते
डाल दे दिल में मेरे या रब मोहब्बत नूर की
शाहे मोहम्मद अली नूरी रेदा के वास्ते
रहमते हक़ का हूं तालिब या खुदा कर दे करम
मुझ हकीरे वेनवावा.....

.....गदा केवास्ते

खत्म ख्वाजगान

अतिया-हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा

बिस्मिल्ला हिर्रमानिर्रहीम

नोट :- पहले तीन बार दरूद शरीफ, एक बार सूरए फातिहा, तीन बार कुलहुवल्लाह फिर तीन बार दरूद शरीफ पढ़कर तमाम बुज़ुर्गाने दीन खासकर सुल्तानुहिन्द हज़रत गरीब नवाज़ और शहंशाहे बगदाद सरकारे गौस पाक रदिअल्लाहो तआला अन्हुमा की अरवाहे तय्येबात को नज्र करें -

1. दरूद शरीफ 11 बार
2. सूरए फातेह 7 बार
3. दरूद शरीफ 100 बार
4. सूरए अलम नश्रह 69 बार
5. सूरए इखलास 100 बार
6. सूरए फातिहा 7 बार
7. सूरए अलम नश्रह 60 बार
8. दरूद शरीफ 100 बार
9. अल्लाहुम्मा या मुफत्तेहल अबवाब 100 बार
10. अल्लाहुम्मा या कादीयहाजात 100 बार
11. अल्लाहुम्मा या राफेअद्दरजात 100 बार
12. अल्लाहुम्मा या मुजीबद्दअ वात 100 बार

13. अल्लाहुम्मा या हल्लल मुश्किलात 100 बार
14. अल्लाहुम्मा या काफीयल मुहिम्मात 100 बार
15. अल्लाहुम्मा या शाफीयल अमराद 100 बार
16. अल्लाहुम्मा या दाफेअल बलिय्यात 100 बार
17. अल्लाहुम्मा या मुसब्बेबल असबाब 100 बार
18. अल्लाहुम्मा या मुक़ल्लेबल कुलूबेवल अबसार 100 सार
19. अल्लाहुम्मा या दलीलल मुतहहेरीन 100 बार
20. अल्लाहुम्मा या ग़ियासल मुस्तग़ीसीन 100 बार
22. अल्लाहुम्मा या मुफर्रेहल महजूनीन 100 बार
23. अल्लाहुम्मा या खैरन्नासिरीन 100 बार
24. ला हौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलीयील अज़ीम ला मलजा वला मनजा मिनहुम इल्ला इलैह 100 बार
25. अल्लाहुम्मा आमीन बेरह मतेका या अरहमर्राहिमीन
26. दरूद शरीफ 11 बार

दरूद शरीफ पढ़कर दुआ मांगें और जुमला पीराने-उज्जाम बुजुर्गानेदीन और खुसूसन मोहसिने मिल्लत हज़रत मौलाना शाह हामिद अली फारूकी और फख्रूल औलिया हज़रत मौलाना फारूक अली साहब फारूक अलैहेमुर्रहमा की अरवाहे तय्येबात को इसका सवाब नज़्र करें और उनके वसीले से खुदा की बारगाह में दुआ करें।

शजरा-ए तय्येबा चिश्तिया हामिदिया (फारसी)

रब्बना बहरे मुहम्मद मुस्तफा व मुरतज़ा
हम हसन हम अब्दे वाहिद हम फुज़ैले बासफा
बहरे इब्राहीम अदहम, हम हुज़ैफा मरअशी
हम अमीन मुमशाद अबू इस्हाक अहमद मुत्तकी
बहरे शाहे बू मुहम्मद नासिरूद्दीन ज़ी वकार
अज़ पए सुल्तान मौदूदे शरीफे राजदार
बहरे उस्मान व मुईनुद्दीन कुतुबुद्दीन वली
हम फरीदुद्दीन निज़ामुद्दीन नसीरूद्दीन सखी
हम कमालुद्दीन सिराजुद्दीन अज़ीमुद्दीन शाह
बहरे महमूद जमालुद्दीन मुहम्मद दी पनाह
हम मुहम्मद बहरे यहया हम कलीमे हक परस्त
हम निज़ामुद्दीन फखरूद्दीन अज़ीमुद्दीन शाह
अज़ पए हसन व मोहद्दिस शाह शरफुद्दीन वली
हम जुबैरे बा सफा व सय्यदे क़ासिम अली
हम इलाही बख्श इरफां ख्वाजए अब्दुल अज़ीज़
फ़ज्ल कुन या रब पए पीराने मा हर दिल अज़ीज़
आबरू ए हामिद व फारूक दर रोजे जज़ा
दामने अफव करम वा कुन बराए मुस्तफा
बहरे शाह मोहम्मद अली ज़ी वेकार
साय ए रहमत अता कुन व फज्लकुन परवरदिगार

तोशा शरीफ की फातिहा

सरकारे ग़ौस पाक रदेअल्लाहो तआला अन्हो के खुसूसी फैजान ने हज़रत मोहसिने मिल्लत को जो शाने विलायत अता की आज सभी उसे जानते हैं। आप को न सिर्फ उनके दीदार का शर्फ हासिल था बल्कि आपने बारहा सर की आंखों से उनके फैज़ान का जल्वा भी देखा। जिसमें तोशा शरीफ की खास बर्कतें भी शामिल हैं। जिसकी आपको सरकारे आला हज़रत फाज़िले बरेलवी से खुसूसी इज़ाजत थी। वालिदे गेरामी फख्रूल औलिया हज़रत मौलाना शाह फारूक़ अली साहब फारूक़ी फरमाते हैं कि जब भी मैंने हज़रत के बताए हुए तरीक़े पर इस फातिहा का एहतिमाम किया। मुश्किल से

मुश्किल काम ऐसे हल हुआ कि दुश्मन तक यह महसूस करने लगे कि हज़रत मोहसिने मिल्लत वो हस्ती हैं जिन्हें सरकारे रदेअल्लाहो तआला अन्हो गौसे पाक ने विलायत का खुसूसी मुक़ाम अता किया। तोशा शरीफ के फातिहा का यह तरीक़ा इन्तेहा मुजर्रब है जिसे आप ने न सिर्फ खुद किया बल्कि दूसरों को भी बताया।

यह फातिहा दो बार दिलाई जाए। आधे सामान की फातिहा शुरू में जब मन्नत माने तब और आधे की फातिहा उस दिन दिलाए जब काम पूरा हो जाए।

सामान- सूजी, शक्कर, असली घी 5-5 किलो। काजू, मगज़े बादाम, पिस्ता, किशमिश, नारियल सवा-सवा किलो, लौंग,

छोटी इलाइची, 70-70 ग्राम और चिरौंजी 100 ग्राम. अच्छी तरह पाक वो साफ होकर पकाने की जगह को मुमकिन हो तो खूब पाक और साफ करके इन का हलवा बनाएं।

तरीक़ए फातिहा - 3 या 5 या 7 परहेज़गार नमाज़ियों से फातिहा दिलाएं। फिर महफिल में अगर कोई सय्यदज़ादे तशरीफ फरमा हों तो पहले उन्हें पेश करें। फिर वो लोगों में बंटवाएं। अगर वो न हों तो जो उन में सबसे बुज़ुर्ग या आलिमे दीन हों वो तक़सी करवाएं।

फातिहा - अव्वल 11 बार, दरूदे गौसिया एक बार, अलहम्दो शरीफ एक बार, आयतल कुर्सी एक बार, सुम्मा अन जल अलैकुम मिन बादिल गम्मे से बेज़ातिरसुदूर तक (सूरए आले इमरान

आयत 154) फिर एक बार मोहम्मदुर्रससूल्लाहे वल्लज़ीन म अ हू आशिद्दाओ ... (सूरए फतह आखरी आयत पारा 26) फिर एक बार सूरए मुज़म्मिल पढ़कर चारों कुल हस्बे दस्तूर पढ़कर सरकारे आला हज़रत और सय्यदना मख्दूमे सिमनान की बारगाह में पेश करते हुए सरकारे ग़ौस पाक की बारगाह में पेश करें।

नोट – इस मौक़े पर हज़रत मोहसिने मिल्लत शाह हामिद अ़ली फारूक़ी और फख्रूल औलिया हज़रत मौलाना फारूक़ अली फारूक़ी अलैहेमुर्रहमा को भी दुआओं में शामिल करें।

2. फातिहा दिलाने वाले की माली हैसियत कमज़ोर हो तो सारे सामान का आधा या चौथाई भी कर सकता है अलबत्ता ऐसी हालत में सूरए मुज़म्मिल के बाद सूरए अलम नश्राह 5 या 7 बार पढने में शामिल कर लें।

हज़रत मोहसिने मिल्लत के वज़ाएफ

आरिफ बिल्लाह वली ए कामिल हज़रत मोहसिने मिल्लत अलैहिर्रहमा दुनिया ए इस्लाम की उन अज़ीम शख्सियतों में से एक है जिन्होंने गुलशने इस्लाम की शादाबी के लिए उस के तहफ्फुज़ के लिए और दुश्मनाने इस्लाम की साज़िशों को नाकाम बनाने के लिए जहां अपने जिगर का खून तक सुखाया वहीं उनके मंसूबों को नाकाम बनाने के लिए रात की नींद भी कुर्बान की और उम्मते मुस्लेमा में दीनी बेदारी के लिएं दिन का चैन भी न्यौछावर किया यही नहीं बल्कि रूहों की शादाबी के लिए ईमान की तवानाई के लिए और दिलों की पाकीज़गीं के लिए औराद वो वज़ाएफ के फयूज़ो बर्कात का जल्वा भी दिखाया। जिसकी वजह से आप के नूरानी चेहरे पर गौस वो ख्वाजा के बर्कतों की किरणें जगमगाती थीं। आंखों में इश्के रसूल के कैफ वो सुरूर की लहरें मचलती थीं और पुरनुर पेशानी ईमानी

जलाल वो जमाल का संगम भी दिखाई देती थी।

इस जगह आपके कुछ खुसूसी औराद वो वज़ाएफ लिखे जा रहे हैं ताकि इससे बर्कत हासिल करने वाले बर्कत भी हासिल कर सकें और अपनी दुनिया वो आखिरत भी कामयाब बना सकें ।

आप जब सो कर उठते तो दाहिनी करवट उठते और अलहम्दो लिल्लाहिल्लजी अहयाना बादा मा अमातेना व ऐलैहिन्नुशूर पढ़कर हाथों में दम करके चेहरे पर फेरते फिर यह दुआ पढ़ते-

बिस्मिल्लाहिर्ररहानिर्रहीम

अल्हम्दो लिल्लाहिल्लजी युंजेलुर्रहमा वल बर्कते

इसके बाद ज़रूरियात से फारिग होकर वज़ू करते और दो रिकअत नमाज तहय्यतुल वजू पढ़कर यह दुआ पढ़ते-

सुब्हानल्लाहे व बेहम्देही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम

व बेहम्देही अस्तगफिरूल्लाह मिन कुल्ले जंम्बिव व अतूबो एलैह

आप फरमाते हैं कि जब भी मैंने इसे पढ़कर पानी में दम करके जिसको भी दिया उसे शेफा मिली

फातिहा हज़रत मोहसिने मिल्लत

नज़र करदए मख्दूमे सिमनां शाह बाबू अब्दुल करीम नक्शे बंदी चिश्ती अशरफी रहमतुल्लाहे तआला (काम्पटी) फरमाते हैं कि हज़रते मोहसिने मिल्लत को खुदा ने अपने हबीबे पाक के सदके में इन्तेहाई बुलंद मुक़ाम अता फरमाया था। जो कोई आपके नाम हस्बे ज़ेल तरीक़े से फातिहा दिलाएगा उसका दिली मक़सद पूरा होगा।

तरीक़-ए- फातिहा

खीर बनाकर पांच किस्म का फूल रखें सात अगरबत्ती सुलगा कर इस तरह फातिहा दिलाएं –

11 बार दरूद शरीफ, 11 बार सूरए एख्लास, 11 बार सूरए फातिहा, 11 बार कलमा शरीफ फिर 11 बार दरूद शरीफ पढ़कर अमीरूल मोमेनीन सय्यदना

फारूके आज़म रदेअल्लाहो तआला अन्हो, सुल्तानुल मशाएख सय्यदना बाबा फरीद गंज शकर रदेअल्लाहो तआला अन्हो हज़रत मोहसिने मिल्लत मौलाना शाह हामिद अली साहब फारूक़ी और फख्रुल औलिया शाह फारूक़ अली फारूक़ी अलैहेमुर्रहमा की अर्वाहे पाक को नज़र करें।

बाद फातिहा दो फूल कपड़े में बांध कर मकान की छत पर या ऊंची जगह रख दें ताकि जिन, भूत, खबीस और जादू टोना से घर की हिफाज़त हो और बाकी फूल किसी मज़ारे पाक पर चढ़ा दें। अगर वहां मज़ार न हो तो किसी महफूज़ जगह उसे दफन कर दें और 7 दिन तक रात में उनके नाम अगरबत्ती सुलगाएं। ताकि बला वो आफात से घर के बाल बच्चों की हिफाज़त भी हो और कारोबार में तरक़्क़ी भी मिले।

फातिहा का इन्क़ेलाबी पैग़ाम

इसाले सवाब इस्लाम का वो मुक़द्दस तरीक़ा है जिसकी बर्कतों से हर रोज़ मस्जिद वो मदरसा की तामीर वो तरक़ी का नया मंसूबा बनता है। तालीम वो तर्बियत के लिए 'तंज़ीमे आलमे वजूद में आती है। उन पर खर्च होने वाली रक़म का ग़ैबी इन्तेज़ाम होता है जिससे हज़ारों यतीम वो ग़रीब बच्चों के रौशन मुस्तक़बिल की राहें खुलती हैं। यहां तक कि उसकी बर्कतों से सिर्फ धरती वाले ही फैज़याब नहीं होते बल्कि क़ब्र में सोने वाले मर्हूमीन की तारीक कब्रें भी जगमगाने लगती हैं। उनकी अंधेरी कब्रे में अचानक रहमतो नूर का उजाला फैलने लगता है। बख्शिस वो मग़फिरत का सावन उमड़ने लगता है और देखते ही देखते कब्र के अंधेरों में

नूर का सैलाब उमड़ पड़ता है।

अगर इस्लाम ने ईसाले सवाब का मुकद्दस तरीका और फातिहा का ठोस रास्ता न बताया होता तो न सिर्फ दसवां, बीसवां के नाम पर महफिलें सूनी होतीं बल्कि मस्जिद वो मदरसा की तामीर वो तरक़्क़ी के लिए रक़म का इन्तेजाम, उसके खर्च वो इखराजात के लिए चंदे की वसूली, यतीम वो गरीब बच्चों के मुस्तक़बिल को रौशन और उज्ज्वल बनाने वाली सारी स्कीमों पर पानी फिर जाता। उनके लिए ज़रूरियात का इन्तिज़ाम और रक़म वग़ैरा का एहतिमाम एक बहुत बड़ा मसला बनकर न सिर्फ कबर के अंधेरों को बढ़ा जाता बल्कि धरती के ऊपर भी हमारे मुस्तक़बिल को तारीक बना देता।

यही वो बुनियादी नुक्ता है जिसकी

वजह से कुर्आन वो हदीस में क़दम कदम पर इसाले सवाब पर बख्शिश वो मग़फिरत के ऐसे झरने नज़र आएंगे जिन के मधुर जल तरंग पर काश्मीर के केसरिया धरती पर गिरने वाले झरनों की मधुरता अक़ीदत वो मोहब्बत के फूल निछावर करती नज़र आएंगी । पूर्णिमा के चांद के मधुर प्रकाश को भी लज्जवान करने वाले सुंदर और मधुर प्रकाश की तरह उसमें ऐसा उजाला दिखाई देता है जिसमें खुलफाए राशेदीन और सहाब ए केराम से लेकर आज तक ऐसे मुकद्दस काफिले नजर आएंगे जिनकी मुस्कुराहटों से दिलों की वीरान दुनिया में उम्मीदों के कंवल खिल रहे हैं । यक़ीन का उजाला फैल रहा है और राहे खुदा में सब कुछ कुर्बान कर देने का जज़्बा अंगड़ाई ले कर आज भी एक नया इतिहास रच

रहा है।

इश्क़ वो इर्फान की सुगंध से सुगंधित सहाबए केराम के पुरनूर ज़माने पर जब हम नज़र डालते हैं तो हज़रत सअद बिन उबादा की वो हदीस नज़र आती है जिस के इन्केलाब अंगेज़ पैग़ाम से बखील और कंजूस दिलों में भी बख्शीश वो अता का जज़्बा मुस्कुराने लगती है। हदीस की मशहूर किताब ''अबू दाऊद'' और ''नसई'' ने जिसे नक़ल किया है।

عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ قَالَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اِنَّ اُمَّ سَعْدٍ مَاتَتْ فَاَيُّ الصَّدَقَةِ اَفْضَلُ قَالَ الْمَاءُ فَحَفَرَ بِئْرًا وَقَالَ هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعْدٍ (رواہ ابو داؤد والنسائی)

हज़रत सअद बिन उबादा रदेअल्लाहो

तआला अन्हो से मरवी है कि उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि उम्मे सअद (मेरी मां) का इन्तेक़ाल हो गया है। उनके लिए कौन सा सदक़ा अफ़ज़ल है? आपने फरमाया पानी। उन्होंने कुआं खुदवा दिया और फरमाया कि यह कुआं सअद के मां के लिए है (इसका सवाब उनकी रूह को पहुंचे) (मिश्कात सफा 169)

इस हदीसे पाक ने दोपहर की धूप की तरह रौशन कर दिया कि ईसाले सवाब न सिर्फ सहाबए केराम का तरीका है बल्कि रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने तो उनके हौसलों को और बढ़ाकर बता दिया कि ईसाले सवाब और फातिहा जहां सहाबए केराम की सुन्नत भी है। वहीं रसूले पाक सल्लल्लाहो

तआला अलैहि वसल्लम का हुक्म भी है और वो खुदाई फरमान भी है।

इस तरह इस्लाम ने उसके ज़रिए ज़िन्दों के सीने से मुर्दों को मिटने भी नहीं दिया और मुर्दों का रिश्ता जिन्दों से टूटने भी नहीं दिया। फिर उसी अटूट रिश्तों ने ईसाले सवाब की वो दुनिया बसाई जिसमें उन मस्जिदों की तामीर का अज़ीमुश्शान मंसूबा भी है जिसके गगन चुंबी मीनारों से धरतीवालों को हर रोज़ पैग़ाम खुदावंदी सुनाया जाता है। उसमें कुआं और हौज़ वगैरा की तैयारी का वो बेमिसाल प्रोग्राम भी है जिसके जरिए पाकीज़गी हासिल करके एक नमाज़ी अपने खुदा से राज़ वो नियाज़ की आसमानी दुनिया में पहुंच जाता है। उसमें उन मदरसों की हिफाज़त का ग़ैबी इन्तेज़ाम

भी है जहां पहुंचकर ऐवाने बातिल को लरज़ाने वाले और फरेब वो धोखा के शैतानों को ललकारने वाले मुजाहेदीन ढल कर समाज में इल्मी इन्केलाब पैदा कर रहे हैं। साथ ही साथ उसमें दसवां, बीसवां चहल्लुम वगैरा के जरिए साहेबे कब्र के रूहानी सुकून और आखिरत की कामयाबी का वो मुक़द्दस इन्तेज़ाम भी है जिसकी हक़ीक़त अगर दुनिया वालों पर ज़ाहिर हो जाए तो राहे खुदा में अपना सब कुछ लूटा कर भी वो यह महसूस करने लगे कि हमने अभी तो कुछ भी नहीं किया। यही नहीं बल्कि उसकी बर्कतों से जहां तालीम का कोई माक़ूल इंतेज़ाम भी नहीं है वहां भी छोटे-छोटे बच्चों के सीने में कुछ सूरतें और चंद आयतें महफूज़ हो कर उनके इस्लामी समाज के अटूट अंग होने का यकीन

दिला रही है। जिन्हें अपने दादा नाना से ऊपर का नाम मालूम नहीं मगर फातिहा की बर्कत से उनका सीना एक ऐसी डायरी बन जाता है जहां अंबियाए केराम, शहीदाने इस्लाम और दीन वो मिल्लत के लिए कुर्बानी देने वाले बुज़ुर्गाने दीन के ऐसे ऐसे नाम महफूज़ हो जाते हैं जिन्हें मिटाने के लिए आज इस्लाम दुश्मन ताक़तें इंटरनेट, टीवी, वीसीआर, प्रिंट मीडिया और अखबार वो पत्रिकाओं की आंधी वो तूफान लिए बढ़ रहा है ताकि किसी तरह मुसलमानों के सीने से उनके मुक़द्दस नाम मिट जाएं। उनके दिल वो दिमाग को इस्लाम की रौशनी से मुनव्वर करने वाला ईमानी चिराग बुझ जाए। मगर हज़ार साज़िशों के बावजूद, हज़ार फरेब और धोखा के बावजूद, हज़ार मुखालिफतों के

बावजूद, वो अपनी साज़िशों में नाकाम होकर अपनी हसरतों की लाश उठाए और आशाओं की चिता लिए मैदान से भागने में मजबूर नज़र आ रहे हैं। एक तरफ उनकी महफिलों में मौत का सन्नाटा है। अपनी नाकामी पर गम वो गुस्सा के अंगारे हैं। अपने स्कीम की बर्बादी पर एक न मिटने वाली बेचैनी वो बेकरारी है तो दूसरी तरफ उस की तजल्लीयात से ऊपर आसमान में बिखरे आकाश गंगा की तरह मोमिन का चेहरा जगमगा रहा है। उनके लबो का तबस्सुम गुलशन में मुस्कुराते फूलों से खेराजे अकीदत हासिल कर रहा है।

कबर में मरने वाला किस हालत में होता है इक्कीसवीं सदी में भी साइंस की ताक़त नहीं कि उस हक़ीक़त से पर्दा उठा सके। मगर इस्लाम

ने सदियों पहले उस मसले को इस तरफ रौशन कर दिया कि जैस साहेब क़ब्र को हम अपनी आंखों से देख रहे हैं ।

قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَا الْمَیِّتُ

فِی الْقَبْرِ اِلَّا کَالْغَرِیْقِ الْمُتَغَوِّثِ یَنْتَظِرُ دَعْوَۃً تَلْحَقُہٗ مِنْ

اَبٍ اَوْ اُمٍّ اَوْ اَخٍ اَوْ صَدِیْقٍ فَاِذَا لَحِقَتْہُ کَانَ اَحَبَّ اِلَیْہِ

مِنَ الدُّنْیَا وَمَا فِیْھَا وَاِنَّ اللّٰہَ تَعَالٰی لَیُدْخِلُ عَلٰی

اَھْلِ الْقُبُوْرِ مِنْ دُعَاءِ اَھْلِ الْاَرْضِ اَمْثَالَ الْجِبَالِ وَاِنَّ

ھَدِیَّۃَ الْاَحْیَاءِ اِلَی الْاَمْوَاتِ الْاِسْتِغْفَارُ لَھُمْ (از مشکوٰۃ صـ ۲۰۶)

रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया। क़ब्र में मुर्दा डूबने वाले फरयादी की तरह होता है। वो बाप, मां, भाई और दोस्त की दुआ के इंतेज़ार में रहता है

और जब वो दुआ उस तक पहुंचती है तो वो
उसको सारी दुनिया से ज़्यादा प्यारी मालूम होती
है। अल्लाह तआला असहाबे कुबूर पर उस दुआ
को पहाड़ जैसा बनाकर भेजता है और बेशक
ज़िन्दों का तोहफा और उनका हदिया मुर्दो के
लिए मग़फिरत चाहना है।

यह हदीसे पाक जहां मुर्दो की परेशानियों और
उनकी मुसीबतों से दुनिया वालों को आगाह कर रही है
वहीं ज़िन्दों की ज़िम्मेदारी को भी उनके सामने ला रही
है। अब यह ज़िन्दों का काम है कि अपने उन बाप, दादा
जिनकी ज़मीन वो ज़ायदाद पर बैठकर वो दुनिया का सुख
उठा रहे हैं कबर में डूबने वाले उस फर्यादी के लिए वो क्या
कर रहे हैं।

एक और हदीसे पाक पढ़ते चलिए ताकि
मुर्दों के तअल्लुक़ से ज़िन्दों की ज़िम्मेदारी की

अहमियत का कुछ और भी अंदाज़ा हो सके।

عَنْ اَنَسٍ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ اَنَّہٗ سَاَلَ رَسُوْلُ اللّٰہِ
صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَقَالَ اِنَّا نَتَصَدَّقُ عَنْ مَوْتَانَا
وَنَحُجُّ عَنْہُمْ وَنَدْعُوْا لَہُمْ فَہَلْ یَصِلُ ذَالِكَ اِلَیْہِمْ فَقَالَ
نَعَمْ اِنَّہٗ یَصِلُ وَیَفْرَحُوْنَ بِہٖ

हज़रत अनस रदेअल्लाहो तआला अन्हो फरमाते है कि उन्होंने सय्यदे आलम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम से पूछा कि हम अपने मुर्दों के वास्ते सदक़ा देते हैं। उनके लिए हज करते हैं क्या यह उन्हें पहुंचता है? आपने फरमाया हां। यह सब उन्हें पहुंचता भी है और वो उससे खुशी भी महसूस करते हैं सिर्फ यही नहीं कि आपने उनकी खुशियों को ज़ाहिर फरमाया बल्कि आपने मिसाल देकर इस

तरह उसे वाज़ेह और साफ फरमाया कि बखील से बखील और कंजूस वो पत्थर दिल इंसान के सीने में भी इसाले सवाब का जज़्बा अंगड़ाई लेने लगा।

आप फरमाते हैं कि

كَمَا يَفْرَحُ اَحَدُكُمْ بِالطَّبَقِ اِذَا اُهْدِىَ اِلَيْهِ

उनकी यह खुशी उसी तरह होती है जैसे कि तुम लोग तोहफा तबक, हदिया की सेनी और अतियों की थाल पर खुशी से झूमने लगते हो। रसूले पाक सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम ने इसाले सवाब और फातिहा के लिए जिस तरह मुर्दा दिलों में हौसला पैदा किया और उसके ज़रिए मुर्दों का ज़िन्दों से न टूटने वाला रिश्ता क़ाएम फरमाकर लोगों को ईसाले सवाब और फातिहा पर उभारा। उसका ही यह नतीजा

था कि सहाबए केराम रिदवानुल्लाहे तआला अलैहिम अजमईन ने अपना यह मामूल बना लिया था कि जब भी उनमें से किसी को दफन किया जाता सहाब ए केराम उसकी क़ब्र पर जाकर उसके लिए कुर्आन की तिलावत करते। मशहूर किताब शर्हुस्सुदूर के मुसन्निफ सहाबए केराम के इस किरदार पर रौशनी डालते हुए लिखते हैं

كانت الانصار واذا مات لهم الميت احتلفوا
قبره يقرءون له القران

सहाबए केराम (रदेअल्लाहो तआला अन्हुम) में जब किसी का इन्तेक़ाल होता तो वो उसकी क़ब्र पर जाकर कुर्आने पाक की तिलावत किया करते।

इसाले सवाब की दुनिया में नई

ज़िन्दगी की किरणें बिखरने वाले इस किरदार से अंदाज़ा लगाईये कि इसाले सवाब के जज़बात और फातिहा की बरकात से सहाबए केराम के कुलूब और उनके दिल वो दिमाग किस तरह जगमगा रहे थे कि मस्जिद नबवी में नमाज़ पढ़ने के बावजूद, जन्नत की कियारी में सजदो की बर्कतें हासिल करने के बावजूद और मुसल्लए रसूल के पास इबादतों की बरकतें हासिल करने के बावजूद वो इन्तेक़ाल करने वाले अपने साथी को क़ब्र में सिर्फ दफन करके ही नहीं लौटते थे बल्कि उसके लिए कुर्आन पढ़-पढ़कर उनकी दूसरी जिन्दगी को ज़्यादा से ज़्यादा कामयाब और बा बरकत बनाने की कोशिश भी किया करते थे। मशहूर राविये हदीस हज़रत अबू हुरैरा रदेअल्लाहो तआला अन्हो जिनसे

हदीसे मर्वी है जिस में 305 बुखारी शरीफ वो मुस्लिम में आज भी महफ़ूज़ हैं वो तो खुद अपने लिए इसाले सवाब का जो एहतिमाम करते थे उसका अंदाज़ा मस्जिदे इशार की उस हदीस से लगाईये जिसे बाबूल मलाहिम में साहेब मिशकात ने तहरीर किया है।

عَنْ صَالِحِ بْنِ دِرْهَمٍ يَقُوْلُ انطلقنا حَاجِّيْنَ فَاِذَا رَجُلٌ

فقَالَ لنَا اِلٰى جَنبكم قَرْيَةٌ يقَالُ لهَا الابلة قلنا نعم

قَالَ من يَضْمَنُ لى مِنكم ان يصلى لى فى مَسْجِدِ العشار

رَكعتين او اربعًا وَيقولُ هٰذِه لابى هُرَيْرَةَ سمعت خليلى

ابا القَاسم صَلَّى الله عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ان الله يبعث مِن

مَسْجِدِ العشار يَوْمَ القِيٰمَةِ شهداء لَا يقوم مع شهداء

بَدْرٍ غيرهم (رواه ابوداود) (مشكوة صـ ٤٦٨)

हज़रत सालेह इब्ने दरहम फरमाते हैं कि हम हज करने जा रहे थे कि एक शख्स मिला तो उसने कहा क्या तुम से करीब ''उबुल्ला'' नाम की कोई बस्ती है । हमारे हां कहने पर उन्होंने कहा कि तुममें से कौन मेरे लिए इस बात की ज़मानत लेता है कि मस्जिद ईशार में मेरे लिए दो चार रिकअतें नमाज़ पढ़कर कह दे कि यह नमाज़ अबू हुरैरा की है । मैंने अपने महबूब अबूल कासिम सल्लल्लाहो तआला अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना कि अल्लाह तआला क्यामत के दिन मस्जिदे ईशार से ऐसे शहीदों को उठाएगा कि उनके सिवा किरी और को शोहदाए बदर के साथ खड़े होने की इजाज़त नहीं होगी।

एक तरफ हदीस की रौशन में मरने वाले

गुनाहगार की बेचारगी और बेबसी का अंदाज़ा लगाईये कि वो समुन्द्र में डूबने वाले फरयादी की तरह होता है जो मग़फिर वो दुआ और इसाले सवाब वो फातिहा का क़दम क़दम पर मुंतज़िर रहता है दूसरी तरफ सहाबए केराम का दस्तूर और उनका तरीक़ा भी देखिए कि वो जन्नतुल बक़ी जैसे कब्रस्तान में दफन होने वाले मुक़द्दस बुज़ुर्गों के लिए भी उनके दर्जात की तरक़्क़ी और दूसरी दुनिया में ज़यादा से ज्यादा कामयाबी के लिए उनकी क़ब्र पर जाकर कुर्आन पढ़ा करते थे। तीसरी तरफ हजरते अबू हुरैरा का किरदार देखिए कि खुद सहाबियत के उस अज़ीम मंसब पर फाएज़ हैं कि उनकी एक निगाहे करम से न सिर्फ हज़ारों जहन्नमी जन्नती बन गए बल्कि आज तक सारी दुनिया में

अहादीसे के जो अनगिनत गुलशन महेक रहे हैं । यह उन्हीं जैसों मेहनतों का नतीज़ा है । मगर इन सब के बावजूद वो लोगों से फरमाईश कर रहे हैं कि मस्जिदे ईशार में नमाज़ें पढ़कर उसका सवाब मेरे नाम कर दें । ताकि उनकी जो फज़ीलत वो बुजुर्गी है उसमें और चार चांद लग सकें ।

आज इस हक़ीक़त से किसे इन्कार है कि फरमाने इलाही, हदीसे रसूल, किरदारे सहाबा वगैरा ही की यह बर्कत है कि आज जब कभी मस्जिदों में पानी की कमी होती है और वहां के मुतवल्ली साहब बोरिंग, ट्यूबवेल या कुआं वगैरा के लिए जैसे ही एलान करते हैं। हर मुसलमान अपने मरहूम बाप दादा वगैरा के इसाले सवाब पर दिल खोलकर इस तरह चंदा

देता है कि देखते ही देखते उस का ऐसा इन्तेज़ाम हो जाता है कि जहां वज़ू के लिए पानी का मिलना दुश्वार था वहां नहाने धोने वगैरा तक की सहूलियत नज़र आने लगती है । जिससे अमीर वो ग़रीब, दौलतमंद और फ़क़ीर सभी फैज़ उठाने लगते हैं । नमाज़ियों को सहूलियत मिल जाती। मुसल्लियों के लिए आसानियां पैदा हो जातो हैं। औराद वो वज़ाएफ और दरूद का विर्द, कुर्आन की तिलावत से मुक़द्दर को जगमगाने वाले सुकून वो मर्सत की चांदनी में मुस्कुराने लगते हैं।

एक तरफ मस्जिद वाले सहूलियत से फैज़याब होते हैं तो दूसरी तरफ कब्र वाले भी तरक़्क़ी ए दर्जात और बख्शीश वो मगफिरत के सावन में नहाने लगते हैं । फिर मरने वाले

कैसे कैसे होते हैं यह बताने की ज़रूरत नहीं
उनमें कुछ गुनाहगार ऐसे भी होते हैं जिनकी
सारी ज़िन्दगी जुआ, सट्टा और शराब में गुज़र
चुकी होती है। मगर उनके इसाले सवाब के लिए
मस्जिद वो मदरसा में जो कुआं खुदाया गया
उसका पानी हर अमीर वो ग़रीब इस्तेमाल कर
रहा है और हर हर क़तरे पर साहेबे क़ब्र को रहमत
वो मग़फिरत का परवाना भी मिल रहा है। उनके
दर्जात भी बुलंद हो रहे हैं और उनकी तारीक
क़बर भी इसाले सवाब की बर्कतों से जगमगा
रही है।

कुछ लोग खुदा के नेक बंदों की दुश्मनी
में ग्यारहवीं शरीफ, बारहवीं शरीफ, मोहर्रम की
सबीला और शर्बत पर हराम, बिदअत वगैरा का
ऐसा फतवा ठोकते हैं कि उसके बोझ से एक

मोमिन की कमज़ोर गर्दन टूटने लगती है। मगर उस वक्त वो यह भूल जाते हैं कि सर से पैर तक गुनाहों के दलदल में धंसे उनके अपने गुनाहगार बाप दादा के नाम से मस्जिद में अन्हो ने खुद जो कुआं खुदवाया उसके इस्तेमाल से वो यक़ीन कर बैठे हैं कि न सिर्फ लोग अब इबादत गुज़ार बन गए बल्कि उनका वो मर्हूम भी जन्नती बन गया। जिस की सारी ज़िन्दगी गुनाहो मे डूबी हुई थी मगर वही लोग बुजुर्गानेदीन की बारगाह में नज़रों नियाज़ और फातिहा पर सय्यदुरशोहदा इमाम आली मुक़ाम सय्यदना इमामे हुसैन रदिअल्लाहो तआला अन्हो ने शरबत पर उनकी सबील पर और उनके नाम पर पिलाए जाने वाले पानी पर आज तक बिदअत वो हराम के फतवे बरसाए जा रहे

हैं। यह भी कैसा अजीब अक़ीदा है कि इमामे
हुसैन रदेअल्लाहो तआला अन्हो के नाम का
पानी और शरबत पीने पर हराम वो नाजाएज़
का फतवा लगा कर एक सीधे साधे सच्चे मोमिन
को जहन्नम का हक़दार बना दिया गया मगर
खुद अपने घर के मर्हूम के नाम कुआं बनवाकर
यकीन कर बैठे कि अब पूरा घर जन्नत का
ठेकेदार बन गया । यह फिक्र देकर शायद वो
यह बताना चाहते हैं कि इमाम हुसैन तो इस्लाम
के लिए सब कुछ कुर्बान करके भी जन्नती नही
हो सके और हमने कुआं की चंद बुन्दो पर कई
पुश्तों को जन्नती बना लिया ?

मोहसिने मिल्लत एकेडमी की हिन्दी में तारीख साज़ किताबें

1. जलज़ला	–	अज़ – अल्लामा अर्शदुल कादरी
	–	हिन्दी–मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
2. पंज सूरए रज़विया	–	मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
3. तबलीगी जमात	–	अज – अल्लामा अर्शदुल कादरी
		हिन्दी–मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
4. आशिके रसूल (इमाम अहमद रज़ा)	–	अज़ प्रोफेसर मसऊद अहमद सा. (पाकिस्तान)
		हिन्दी–मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
5. पैगम्बरे इस्लाम और उनका संदेश	–	मौलाना मोहम्मद अलीफारूकी
6. ताजदारे छत्तीसगढ़	–	मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
7. कुत्बे राजगांगपुर	–	मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
8. ताजुल औलिया	–	मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
9. रायपुर की बहार (बंजारी वाले बाबा)	–	मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
10. तज़किर ए बुर्हाने मिल्लत	–	मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
11. इस्लाम और मोआशिरा	–	मौलाना मोहम्मद अलीफारूकी
12. तबलीगी जमात और इस्लाम	–	मौलाना मोहम्मद अलीफारूकी
13. बाबरी मस्जिद (तारीख के आईने में)	–	मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
14. बारह महीने की मुकद्दस दुआएं और तरीकए फातिहा	–	मौलाना मोहम्मद अली फारूकी
15. हज की दुआएं	–	मौलाना मोहम्मद अली फारूकी

एक नज़र इधर भी

गुले गुलज़ारे फारूक़ियत मोहसिने मिल्लत हज़रत मौलाना शाह मोहम्मद हामिद अली साहब फारुकी की चालीस साला खिदमत की मुंह बोलती तस्वीर। जिसने न सिर्फ मध्य भारत के कुफ्रिस्तान में इश्के रसूल की चांदनी बिखेरी और घरों घर ईल्म की रौशनी फैलाई बल्कि शुद्धि आंदोलन के मौक़े पर गैर मुस्लिमों को इस्लाम से वाबस्ता करके एक नई तारीख भी जन्म दिया।

ईदुल फित्र और ईदुल अदहा के मौक़े पर हम अपने इस महबूब और तारीख साज़ इदारे का तआवुन करके आने वाली नस्लों को इस्लाम से वाबस्ता कर के दुनिया वो आखिरत की कामयाबी हासिल करें।

बानिये दारुल यतामा नाएबे शाहे हुदा।
आप पे साया फेगन है अशरफो अहमद रज़ा॥
ता अबद जारी रहेगा फैज़ का दरिया तेरा।
तिशनगी अपनी बुझाएंगे यहां शाहोगदा॥